तृतीय अध्याय

'आधा गाँव' में आँचलिकता

आधा गाँव उपन्यास में आँचलिकता

भूमिका – हिन्दी उपन्यास साहित्य में आँचलिक उपन्यास की प्रवृत्ति का प्रारम्भ फणीश्वरनाथ रेणु के "मैला आँचल" (1954) से माना जाता है । इस प्रवृत्ति का विकास स्वातंत्र्योत्तर युग की ही देन होने के कारण इसपर काफी चर्चा हो गई । विद्वानोंने अंचल, आँचलिक तथा स्थानीय कलर आदि को अपने-अपने दृष्टिकोन से परिभाषित एवं विश्लेषित करने का प्रयास किया है । अतः हम यहाँ प्रथम उत्पत्ति कोश के आधारपर अचंल शब्द का अर्थ देखेंगे और उसके बाद उपन्यासों के सन्दर्भ में आँचलिकता को देखकर विशेषताएँ निश्चित करेंगे ।

संस्कृत तथा अँग्रेजी कोश

"संस्कृत-इंग्लिश डिक्शनरी"(1) में इसका अर्थ वस्त्र के छोर से लिया है ।

"आदर्श हिन्दी संस्कृत कोश"(2) में इसका अर्थ वस्त्र का भाग तथा प्रान्त विशेष का भाग दिया है । "हलायुध कोश"(3) के अनुसार "अंचल का उत्पत्ति अर्थ होता है वस्त्र का भाग अथवा छोर । डॉ. आदर्श सक्सेनाजी(4) "अंचल" शब्द का अर्थ बताते हुए पाणिनीय रूप को स्पष्ट करते हैं – गमन का फल और गमन की चेष्टा । ऑक्सफर्ड इंग्लिश डिक्शनरी"(5) में "रीजन प्राकृतिक विशिष्टता रखनेवाला भूभाग माना गया है ।

हिन्दी शब्दकोश

हिन्दी शब्दकोशों में "अंचल" शब्द के अर्थ इसप्रकार दिए गये हैं –
"हिन्दी शब्दसागर"(6) में इसका अर्थ है साडी अथवा ओढनी का वह भाग जो सिर अथवा कंधे पर होते हुए सामने छाती पर फैला हुआ हो । इसके दूसरे अर्थ – "किनारा, तट, तलहटी, घाटी, वन, गुहा आदि दिए गए हैं ।

"मानक हिन्दी कोश"(7) में इसका अर्थ है सीमा के आसपास का प्रदेश । दूसरा अर्थ है किसी क्षेत्र का कोई पार्श्व और किसी चीज के सिरे पर पडनेवाला भाग या सिरा ।

"प्रामाणिक हिन्दी कोश"(8) में इसका अर्थ है साडी या चादर का सिरा या पल्ला । (2)सीमा के पास का प्रदेश, (3)किनारा, तट आदि । "अंचल" शब्द का उत्पत्ति अर्थ देखने के बाद अब परिभाषाएँ देखेंगे –

आँचलिक उपन्यास स्वातंत्र्योत्तर युग की लोकप्रिय विधा है । "मैला आँचल" पहला आँचलिक उपन्यास माना जाता है। इसके प्रकाशन के बाद अनेक आलोचक, विद्वान, नई दृष्टि से आँचलिकता की परिभाषा करने लगे हैं । विद्वानोंद्वारा दी गई आँचलिक उपन्यासों की परिभाषाएँ इसप्रकार हैं ।

डॉ. चुम्म ने(9) आँचलिक उपन्यास को "देशप्रधान" संज्ञा से सम्बोधित किया है । उनके मतानुसार जिस उपन्यास के सभी उपकरणों का दृष्टि केंद्र या प्रकाशन ध्येय परिसीमित देश विशेष हो जाता है और अन्य तत्व इसीसे नियत–निर्मित होते हैं उस उपन्यास को "देश–प्रधान" कहते हैं ।

डॉ. रामदरश मिश्र(10) का आँचलिक उपन्यास के बारे में मत है – "स्थिर स्थान पर गतिमान समय में जीते हुए अंचल के व्यक्तित्व के समग्र पहलुओं को उद्घाटित करना"।

श्री प्रकाश बाजपेयीजी(11) कहते हैं – "सीमित देश, असाधारण चित्रण , यथार्थवादी वैचित्र्यपूर्ण विशेषताओं से युक्त कृति ही आँचलिक कृति कही जायेगी ।"

राधेश्याम कौशिक(12) जी के मतानुसार "जिन उपन्यासों में किसी विशिष्ट प्रदेश के जनजीवन का समग्र बिम्बात्मक चित्रण हो उन्हें "आँचलिक उपन्यास" कहा जाता है ।

सुभाषिनी शर्माजी(13) के मतानुसार "सामान्यतः किसी भी नागरिक अथवा ग्रामीण अंचल के जीवन को आधार बनाकर लिखे गये उपन्यास को आँचलिक कहा जाता है । जिसमें उस परिवेश का जनजीवन, आचार –विचार, संस्कृति, भाषा, धर्म और संस्कारों का परिचय दिया जाता है ।"

"त्यागी" (सुमित्रा) जी(14) के मतानुसार "किसी अंचल विशेष के निवासियों के जीवन–दर्शन की अभिव्यक्ति के लिए उस भूमि–भाग की संस्कृति, आचार–विचार, मान्यताओं, विश्वासों, रीतिरिवाजों, बोली, गीतों, लोककथाओं, किवदन्तियों एवं लोक–जीवन का उद्घाटन करनेवाले उपन्यास आंचलिक कहलाते है ।"

मृत्युंजय उपाध्याय जी(15) के मतानुसार "आंचलिक उपन्यासों में निश्चय ही किसी एक अपरिचित एवं उपेक्षित ग्राम या भूखण्ड की आशा – आकांक्षाएँ, विशेषताएँ–दुर्बलताएँ बडी ईमानदारी से चित्रित होती हैं । उस अंचल विशेष के प्रति आत्मीयता आंचलिक उपन्यासकार के लिए पहली और आखिरी शर्त है ।"

जैनेन्द्र(16) ने लिखा है – "आंचलिक प्रवृत्ति वह दृष्टि है जिसके केन्द्र में अमुक पात्र या चरित्र उतना नहीं जितना वह स्वयं भू– भाग अचंल है । पात्र स्वयं में इष्ट नहीं मानो अमुक समष्टि के जीवन की यथार्थता को उभारने में ही इसकी चरितार्थता है ।" जैनेन्द्र व्यक्ति चित्रण से अधिक सामूहिक चरित्र–चित्रण को महत्व देते हैं ।

इसप्रकार और भी अनेक विद्वानों तथा समीक्षकों ने आँचलिकता के बारे में अपने मत प्रकट किए हैं । सभी मतों का सार यों हैं –"स्थापित समाज–जीवन से अपनी अलग विशेषताएँ रखनेवाले मानव समूह का चित्रण करनेवाला उपन्यास आँचलिक उपन्यास होता हैं ।" उपर्युक्त परिभाषाओं से उपलब्ध होनेवाली विशेषताएँ इसप्रकार हैं –

1. सीमित भौगोलिक परिवेश

आँचलिक उपन्यास में सीमित भौगोलिक परिवेश का चित्रण होता है । वह भौगोलिक परिवेश अन्य भूभाग से अपनी अलग पहचान रखता है । अंचलवासियों की अपनी लोकपरम्पराएँ, लोककथाएँ होती है, उनकी अपनी मान्यताएँ एवं जीवनप्रणाली होती है । इसका चित्रण आँचलिक उपन्यास का वर्ण्य–विषय होता है।

2. प्रकृति का प्रधानरुप से चित्रण

आँचलिक उपन्यास में प्रकृति का प्रधान और सजीव चित्रण होता है । इसमें चित्रित प्रकृति पात्रों के चारित्रिक निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है । आँचलिक उपन्यास में चित्रित प्रकृति या भौगोलिक परिवेश ग्रामीण एवं नागरी होता है । प्रकृति का इतना सजीव चित्रण होता है कि प्रकृति वातावरण निर्मिति का केवल कारण न बनकर एक पात्र के रूप में आती है ।

आँचलिक उपन्यासों में चित्रित प्रकृति अंचलवासियों के जीवन का अभिन्न अंग बनकर आती है । केवल प्रकृति का चित्रण करनेवाले उपन्यास आँचलिक न होकर संम्पूर्ण कथावस्तु को प्रभावित एवं नियंत्रित करनेवाले तत्व के रूप में प्रकृति का चित्रण आँचलिक उपन्यासों की विशेषता है ।

3. प्रकृति का पार्श्वभूमि के रूप में चित्रण

उपन्यास में प्रकृति का पार्श्वभूमि के रूप में चित्रण होता है । उपन्यास के पात्रों को अगर सजीव बनाना है तो वातावरण सहायता करता है । प्रत्येक उपन्यास में देशकाल वातावरण का महत्व होता है खास तौर से ऐतिहासिक उपन्यास में इस तत्व को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है । आंचलिक उपन्यासों में भी देशकाल–वातावरण का विशेष महत्व होता है । यह वातावरण ग्रामीण या शहरी होता है । आँचलिक उपन्यास में वर्णित प्रकृति केवल सुन्दर नहीं होती अपितु असुन्दर भी होती है । उपन्यास का अभिन्न अंग बनकर आयी प्रकृति का प्रभाव सम्पूर्ण कथावस्तूपर दिखाई देता है ।

4. लोक संस्कृति का सम्पूर्ण अंकन

लोक शब्द का अर्थ है "सभ्य", शिष्ट, सुसंस्कृत लोगों से दूर रहनेवाले वे लोग जिनकी अपनी अलग प्रथाएँ होती हैं, अलग जीवन पध्दति होती है । अपनी विशिष्ट जीवन पध्दति के कारण वे अन्य समूह से अलग पहचान रखते हैं । वे प्रथा –परम्पराओं के पालन के प्रति अत्यधिक सतर्क रहते हैं परिणामतः उनका सम्पूर्ण जीवन पिछडेपन का शिकार हो गया है । यह उनकी विशेषता बन गई है । अर्थात पिछडे हुए लोगों की संस्कृति का चित्रण आँचलिक उपन्यासों में होता है ।

इन लोगों की प्रथा–परम्पराएँ, वेशभूषा, खान–पान, मनोरंजन के साधनों, अंधश्रध्दाओं, विश्वासों को आँचलिक उपन्यासकार अपने उपन्यास में प्रस्तुत करते हैं । साथ ही उनकी सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, नैतिक समस्याओं को प्रस्तुत करते हैं । अर्थात आँचलिक उपन्यास में अंचलविशेष का संपूर्ण सांस्कृतिक जन–जीवन दिखाई देता है ।

5. लोकजीवन और नवीन सामाजिक चेतना

लोकजीवन का सम्पूर्ण वास्तव चित्रण आँचलिक उपन्यास की प्रमुख विशेषता मानी जाती है ।

लोकजीवन का समग्र चित्रण करनेवाला आँचलिक उपन्यासकार बदलते मूल्यों और राजनीतिक , आर्थिक , सामाजिक, परिवेश का वास्तव चित्रण करता है । युगीन परिवेश के प्रभाव के कारण अद्भूत गतिशीलता एवं नवीन सामाजिक चेतना को मुखर करना आँचलिक उपन्यास की शक्ति मानी जाती है । लोकजीवन और नवीन सामाजिक चेतना को वाणी देनेवाला आँचलिक उपन्यास अपना अलग महत्व रखता है ।

6. वास्तववादी दृष्टीकोन

वास्तव या यथार्थवादी दृष्टि से चित्रांकन आँचलिक उपन्यास की विशेषता होती है । वास्तववादी दृष्टि के कारण पात्रों का चित्रण स्वाभाविक सजीव बन जाता है । वास्तववादी दृष्टिकोण के कारण समाज जीवन का सही अंकन होता है ।

कतिपय उपन्यासकारों ने अश्लिल और अनैतिकता को चित्रित करने में वास्तवता मानकर वर्णन किया है, परिणामस्वरूप ऐसे उपन्यास रंजनात्मक उपन्यास की कोटि के बन गए हैं । सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक जीवन का यथार्थवादी चित्रण आंचलिक उपन्यास की विशेषता है ।

7. समाज के सभी वर्गों का उदारवादी दृष्टि से चित्रण

आँचलिक उपन्यासकार की ~~दृष्टिकार की~~ दृष्टि में सभी पात्रों का महत्व समान होता है ।

वह धर्म जाति या आर्थिक स्थिति के आधारपर किसी को गौणत्व या प्रमुखता न देकर उदारवादी दृष्टि से सभी का चित्रण करता है । उसके मन में भेदाभेद की भावना नहीं होती । वह विषयवस्तु के साथ जुडा हुआ होता है । उसकी दृष्टि पूर्वग्रह दूषित नहीं होती । वह समाज के सभी वर्गों का सहानुभूति और अपनत्व के साथ चित्रण करता है ।

8. सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन का अंकन

आँचलिक उपन्यासों में सामूहिक पात्रों के चरित्र-चित्रण को महत्व दिया जाता है । इन पात्रोंद्वारा मानवीय भावसत्यों के सौंदर्य का चित्रण वे करते हैं । साथ ही मानवसभ्यता और मानसशास्त्र का चित्रण इसमें होता है । इसके अन्तर्गत विविध जातियों के रीति-रिवाजों, विश्वासों, प्रथाओं, रहन-सहन, वेशभूषा, खान-पान के मानदण्डों और विभिन्न त्यौहारों, विश्वासों, धर्मभावनाओं, तंत्र-मंत्रो, चमत्कारों आदि का चित्रण होता है । कुल मिलाकर सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन का समग्र चित्रण आँचलिक उपन्यास में होता है ।

9. स्थानीय बोली

मनुष्य के भावों-विचारों को अभिव्यक्त करने का साधन भाषा है । प्रत्येक मनुष्य की बोली भाषा या व्यक्तिबोली भिन्न-भिन्न रहती है । व्यक्ति की शिक्षा, संस्कार, व्यवसाय, समाज में उसका स्थान और वातावरण आदि कारणों से व्यक्तिबोली में अन्तर आता है । व्यक्तिबोली में अंतर होते हुए भी अनेक व्यक्तियों की व्यक्तिबोली में कई एक समानताएँ होती हैं । इन समानताओं के कारण उनमें आपसी सम्पर्क विचार-विमर्श की प्रक्रिया सुलभ होती है । व्यक्तिबोली का विकसित रूप स्थानीय बोली है । स्थानीयबोली से बोली और बोली से भाषा विकसित होती है । आँचलिक उपन्यासों में स्थानीय बोली का प्रयोग किया जाता है । स्थानीय बोली के प्रयोग से अंचलवासियों की मानसिकता, लोकजीवन आदि का वास्तव चित्रण करने में सहायता मिलती है ।

आंचलिक उपन्यासों में ग्रामीण पात्रों के मुँह अगर नागरी भाषा का प्रयोग किया जाय तो वह कृत्रिम लगेगा।स्थानीयबोली के प्रयोग से ही अंचल का सांस्कृतिक जीवन पूर्ण रूप से अभिव्यक्त हो सकता है । स्थानीय रंग लाने के लिए स्थानीय बोली का प्रयोग आंचलिक उपन्यासों में आवश्यक होता है ।

सारांश में अंचल के जन–जीवन का चित्रण उसकी स्थानीयबोली के प्रयोग से सजीव लगता है, उससे सच्चा आनंद मिलता है ।

10. प्रादेशिक अस्मिता और आत्मीयता का भाव

आँचलिकता में यह विशेषण महत्वपूर्ण माना जाता है । इस विशेषता में लेखक की तटस्थवृत्ति आवश्यक है । इसके कारण ही उसकी कृति सच्ची, सरस लगती है और कृति सच्ची, यथार्थ लगने के लिए उस लेखक के मन में उस अंचल के प्रति आत्मीयता का भाव होना आवश्यक है । आत्मीयता का भाव लेखक के मन में तब निर्माण होगा जब लेखक स्वयं उस अंचल का हो या उस अंचल के लोगों में वह रहा हो । इससे उसकी कृति में कृत्रिमता नहीं आयेगी । प्रादेशिक अस्मिता और आत्मीयता का अर्थ यह है कि उस अंचल और प्राकृतिक वातावरण के प्रति लेखक के मन में प्रेम और अपनापन हो । वहाँ के रीतिरिवाजों एवं समाज–जीवन के प्रति लेखक के मन में ममत्व, अभिमान हो । लेखक जब उस अंचल से प्रभावित होकर उनके व्यक्तिगत जीवन एवं समाज–जीवन का तटस्थ, निष्पक्षता से चित्रण करता है तभी आँचलिक उपन्यास की निर्मिति होती है ऐसा माना जाता है ।

सारांश में उपन्यास को सच्चा, श्रेष्ठ और सफल आँचलिक उपन्यास बनाने के लिए ऊपर दिए हुए सभी लक्षण उनमें होने चाहिए इन तत्वों के बिना वह उपन्यास श्रेष्ठ आँचलिक उपन्यासों की कोटि में नहीं आ सकेगा ।

11. ग्रामीण वातावरण और पिछडे हुए लोगों का जीवन

प्राय: सभी आँचलिक उपन्यासों में वहाँ के पिछडे हुए लोगों का और ग्रामीण वातावरण का चित्रण उपलब्ध होता है । ग्रामीण संस्कृति नागरी संस्कृति से अलग होती है । वहाँ के लोगों की बोली, रहन–सहन, उनका खान–पान, प्रथा –परम्पराओं, विश्वासों आदि के चित्रण से उनकी जीवन–संस्कृति दिखाई देती है ।

कतिपय विद्वान आँचलिक उपन्यासों को नागरी अंचल के साथ जोडने का आग्रह करते हैं ।

उनका कहना है कि विशिष्ट जीवन–पध्दति से जीवन यापन करनेवाला समाज ग्रामीण परिवेश के साथ शहर में भी रहता है । शहर या नागरी परिवेश में रहकर भी वह समाज अपनी अलग जीवन प्रणाली, संस्कृति को छोडने के लिए तैयार नहीं है । परम्परागत जीवन प्रणाली के कारण उस समाज में पिछडापन दिखाई देता है । आँचलिक उपन्यासों में चित्रित समाज भौतिक सुधारों और अविष्कारों से अपरिचित अपनी ही धुन में जीवन–यापन करता हुआ दिखाई देता है ।

12. विस्मय और कौतूहल की भावना

नागरी जीवन चित्रण पढकर पाठक उब गया था ऐसे समय आँचलिक उपन्यास उसके सामने आ गया । आँचलिक उपन्यासकार ने अछूते अस्पर्शित विषयों एवं जनजातीय ग्रामीण जीवन को अपने उपन्यास का विषय बनाया । ऐसे उपन्यास को पढते समय पाठक के मन में विस्मय, कौतूहल की भावना निर्माण हो गई । उसे नया देखने और सुनने को मिला । वह अपरिचित मानव–समूह की समस्याओं एवं संस्कृति से परिचित हो गया । यह चित्रण उसके लिए विस्मय और कौतूहल का विषय था ।

13. जातिवाद

जातिप्रथा भारतीय समाज की अपनी खास विशेषता है । अनेक प्रभाव एवं परिवर्तन के बावजूद भी भारतीय समाज से जाति–प्रथा का निर्मूलन नहीं हुआ । भारतीय समाज का अभिन्न अंग जाति –व्यवस्था है । इसका परिणाम व्यक्ति और समाज दोनों के लिए लाभकारक एवं हानिकारक दोनों रूप में हुआ है । जातिप्रथा प्रथम कर्म के अनुरूप थी बाद में जन्म के अनुरूप हो गई ।

जातीयता या जातिवाद जातिव्यवस्था का गम्भीर पहलू है । जातिवाद वह संकुचित मनोभावना है जो व्यक्तियों को अपनी जातिविशेष के स्वार्थों की दृष्टि से सोचने के लिए प्रेरित और अपनी जाति के हितों को सर्वोपरि समझने के लिए प्रोत्साहित करती है । जातिवाद के कारण सामाजिक एकता में दरारें निर्माण होती हैं । साथ ही साथ एक जाति के लोगों में एकता की भावना निर्माण होती है ।

आँचलिक उपन्यासों में वर्णित समाज अनेक जाति–टोलियों में विभाजित है । प्रत्येक जाति

की अपनी विचार प्रणाली रूढी–परम्परा, संस्कार, शिक्षा–दीक्षा की पध्दति अलग होती है । आँचलिक उपन्यासकार उक्त विशेषताओं का चित्रण करता है ।

14. स्थानीय रंग

उपन्यासों में देशकाल वातावरण की तरह ही स्थानीय रंग आँचलिकता की एक बाहय विशेषता है । प्रत्येक उपन्यास में स्थान विशेष का वर्णन वहाँ की प्राकृतिक पार्श्वभूमि में किया जाता है । इसके अन्तर्गत उस अंचल के लोगों का वर्णन, प्राकृतिक वर्णन, उनकी रहन–सहन, खान–पान, परम्परा, वहाँ की स्थानीय बोली और लोक गीतों का चित्रण होता है ।

आँचलिकता की दृष्टि से स्थानीय रंग की तरह वातावरण निर्मिति को महत्व दिया जाता है । इसके अन्तर्गत पात्रों या लेखक के भावावेगों का चित्रण आता है । यह अंतरंग लक्षण होता है और स्थानीय रंग एक विशेषता है । आँचलिकता में स्थानीय शब्द होने के कारण चित्रण में सजीवता आती है और इसीकारण बोली को स्थानीय रंग में महत्व है ।

15. लेखक का समाजशास्त्रीय और सौंदर्यवादी दृष्टिकोण

समाज में विभिन्न प्रकार के लोग रहते हैं । उन भिन्न प्रकार के व्यक्तियों का आचरण भी भिन्न होता है । उनके आचरण से ही व्यक्ति के विचार, रहन–सहन, बोली उनका समाज में स्थान आदि बातों का पता हमें लगता है । अगर हमें किसी समाज का चित्रण करना है तो पहले उस समाज की समस्याओं को देखना आवश्यक है । इसके लिए पहले उस अंचल का विचार करना आवश्यक है । समाजशास्त्र से मनुष्य का देखने का दृष्टिकोण व्यापक, संवदेनक्षम बन जाता है । मनुष्य में पारम्पारिक प्रेम, सहानुभूति और मानवता की भावना पैदा होती है ।

16. राष्ट्रीय जागरण की भावना और जन–जागरण की नई दिशा

जनतंत्र शासन प्रणाली, प्रौढ मताधिकार, पंचायत शासन व्यवस्था, नया संविधान आदि के कारण स्वातंत्र्योत्तर युग में दूर–दराज के अंचलों में चेतना की लहर दौडने लगी है । राजनीतिक जागरण, शिक्षा प्रसार, कानूनी प्रयास, आदि के कारण सदियों से उपेक्षित लोग अपने अधिकार पाने

के लिए संघर्ष करने लगे हैं । वे अपनी माँगों की पूर्ति के लिए हडताल जुलूस का प्रयोग करने लगे हैं । आँचलिक उपन्यासों में उक्त तथ्यों का सजीव अंकन उपलब्ध होता है । स्वार्थी नेतागण, भ्रष्ट चुनाव–व्यवस्था, भ्रष्ट नौकरशाही का बोलबाला आदि के कारण जातिवाद, साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन मिल रहा है । राजनीतिक दाँवपेंच के रूप में जातीय झगडों एवं साम्प्रदायिक दंगों को देखा जाता है ।

स्वातंत्र्योत्तर युग की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक गतिविधियों ने सम्पूर्ण भारतीय जनमानस को प्रभावित एवं आन्दोलित किया है जिसका वास्तव चित्रण आँचलिक उपन्यास की विशेषता है । राष्ट्रीय जागरण, जन जागरण की नई दिशा का चित्रण आँचलिक उपन्यास का वर्ण्य विषय है ।

17. फोटोग्राफिक शैली

आँचलिक उपन्यासों की यथार्थवादी शैली ही फोटोग्राफिक शैली है । फोटोग्राफर दृश्य की तस्वीर जिसतरह खींचता है उसीप्रकार यथार्थवादी दृष्टि का लेखक घटनादृश्य का वर्णन तटस्थवृत्ति से करता है । इसमें लेखक की सौंदर्यदृष्टि और वर्णन क्षमता महत्वपूर्ण होती है । यथार्थवादी दृष्टि का लेखक घटना-दृश्य का वर्णन तटस्थवृत्ति से करता है । इसमें लेखक की सौंदर्यदृष्टि और वर्णन –क्षमता महत्वपूर्ण होती है । यथार्थवादी दृष्टि का लेखक मानवीय प्रवृत्तियों का वर्णन करते समय अच्छाई और बुराइयों को एक ही दृष्टि से देखता है । परिणामस्वरूप कभी–कभी विकृतियों के चित्रण में सीमा का भंग होने की स्थिति निर्माण होती है तब लेखक को संतुलन रखकर विकृतियों के जाल से बचना चाहिए श्रेष्ठ आँचलिक उपन्यासकार मर्यादा का भंग न कर फोटोग्राफिक शैली का प्रयोग करता है ।

18. लोक–साहित्य

लोक–साहित्य को अँग्रेजी में "फोकलोर" भी कहते हैं । जिसका अर्थ है पिछडी हुई जाति के तत्व । आजकल सभ्य समाज में भी ये तत्व मिलते हैं । लोक–साहित्य और लोकसंस्कृति में अन्तर है । लोकसाहित्य को पाँच भागों में विभाजित किया जाता है । जैसे लोकगीत, लोककथा,

लोकगाथा, लोकनाटय और लोक सुभाषित आदि ।

लोकसाहित्य जनता के भावों की सहज अभिव्यक्ति है जो सहज, सरल, स्वाभाविक होता है । आँचलिक उपन्यासकार का उद्‌देश किसी विशिष्ठ अंचल की संस्कृति का चित्रण करना होता है । अतः आँचलिक उपन्यासकार लोक साहित्य का चित्रण करता है । जिस साहित्य में सामान्य जनता का सुख-दुःख अभिव्यक्त होता है, वह लोक साहित्य माना जाता है । लोकसाहित्य का सम्बन्ध जनजीवन की आशाओं और भावों से होता है । सीमित सम्प्रेषणीयता दूरुह शब्द प्रयोग, अनुवाद की कठिनता आदि आँचलिक उपन्यासों की विशेषताएँ गिनाई जाती हैं । उपर्युक्त विशेषताओं के आधारपर हम "आधा गाँव" उपन्यास को परखेंगे -

1. सीमित भौगोलिक परिवेश का अंकन

गंगौली की तलाश में निकले डॉ. राहीजी ने अपने अनुभवों को कथा का आधार बनाकर "आधा गाँव" उपन्यास की रचना की है । उन्होंने उत्तर प्रदेश के गाजीपुर क्षेत्र के गंगौली के शीआ मुसलमानों की सम्पूर्ण व्यथा-कथा का वर्णन किया है । शीआ मुसलमानों की लोक-परम्पराएँ, लोक-कथाएँ , जीवन-पध्दति, उत्सव-त्यौहार आदि का विस्तृत वर्णन आलोच्च उपन्यास में उपलब्ध होता है । उपन्यासकार डॉ. राहीजी ने पूरे गाँव को कथा का आधार न बनाकर केवल आधे हिस्से को वास्तविकता के साथ अंकित किया है ।

गंगौली के लोगों के साथ कथावस्तु कलकत्ता तथा उनके नौकरी के स्थान एवं द्वितीय विश्वयुध्द के युध्दक्षेत्र तक पहुँच गयी है फिर भी उसका गंगौली के साथ अटूट रिश्ता कायम है । कथावस्तु में कहीपर भी बिखराव नहीं है ।

गंगौली के आधे भाग की कथा इसमें वर्णित होने के कारण सीमित भौगोलिक परिवेश का चित्रण इस तत्व का इसमें समावेश हुआ है ।

कलकत्ता, द्वितीय विश्वयुध्द का युध्दक्षेत्र आदि के चित्रण को देखकर कतिपय विद्वान इसके आँचलिकता पर प्रश्नचिन्ह लगाते हैं । वास्तव में इस प्रकार की आपत्ति उठाना अनुचित है

क्योंकी कथावस्तु में कही पर भी बिखराव नहीं है । सम्पूर्ण कथानक मिट्टी के साथ जुडा हुआ है । अतः आलोच्च उपन्यास आँचलिक उपन्यास है ।

2. प्रकृति का प्रधानरूप से चित्रण

प्रकृति मानव की चिरसंगिनी है । उसकी गोद में ही मानव ने आँखें खोली है और उसके अंक में खेल-कूद कर उसके अन्न-जल और वायु का सेवन कर मानव बडा हुआ है । इसीलिए अनादि काल से ही मनुष्य अपनी कलाओं में प्रकृति का उपयोग करता आया है । आँचलिक उपन्यास की प्रमुख विशेषता के रूप में प्रकृति चित्रण का उल्लेख किया जाता है । प्रकृति का सजीव अंकन आँचलिक उपन्यासों में उपलब्ध होता है ।

साहित्यकारों एवं कलाकारों ने प्रकृति का चित्रण आलम्बन, उद्दिपन, अलंकरण, मानवीकरण आदि रूपों में किया है । आँचलिक उपन्यासों में चित्रित प्रकृति आँचलवासियों का जीवनाधार एवं उनके समस्त क्रियाकलापों को नियंत्रित तथा गति देनेवाले तत्व के रूप में चित्रित है । ।

डॉ. राही मासूम रजा के श्रेष्ठ उपन्यास "आधा गाँव" में प्रकृति-चित्रण रूढ अर्थ आलम्बन उद्दिपन, अलंकरण, मानवीकरण के रूप में नहीं है । अपितु प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु गंगौली की मिट्टी के साथ जुडी हुई है । प्रारम्भ से अंत तक कही पर भी कथावस्तु गंगौली की मिट्टी से अलग नहीं हुई है । अतः रूढ अर्थ में इसमें प्रकृति का चित्रण न होकर भी "आधा गाँव" उपन्यास प्रकृति से अलग नहीं हुआ है । इसीलिए प्रस्तुत उपन्यास को आँचलिक उपन्यास माना जाता है । पेड-पौधे , पशु-पक्षी, झील-झरने, चंद्र-सूर्य, वसंत-वर्षा, आदि का चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में न होने के कारण कतिपय आलोचकों ने "आधा गाँव" को आँचलिकता की कोटि में परिगणित करने का विरोध किया है । रूढ अर्थ में प्रकृति का चित्रण न होकर भी कथावस्तु प्रकृति से प्रभावित एवं जुडी हुई है ।

3. प्रकृति का पार्श्वभूमि के रूप चित्रण

राही जी ने अपने उपन्यास "आधा गाँव" में प्रकृति चित्रण को कही भी स्थान नहीं दिया

है । उनका उद्देश शीआ मुस्लिम समाज का वर्णन करना रहा है । जिसके लिए उन्हे प्रकृति चित्रण का सहारा लेना आवश्यक नहीं लगा है । इससे इस उपन्यास में कहीपर भी प्रकृति चित्रण का वर्णन हमें नहीं मिलता है । आँचलिक उपन्यास प्रस्तुत करते समय किसी जाति या सम्प्रदाय को हमारे सामने उद्घाटित करने के लिए उसमें प्रकृति का वर्णन आवश्यक ही होगा ऐसे नहीं है । शायद इसीलिए उपन्यासकार ने इस तत्व की ओर ध्यान नहीं दिया है । अतः प्रस्तुत उपन्यास को आँचलिक उपन्यास के अंतर्गत रखना योग्य माना जा सकता है ।

4. समाज-जीवन का चित्रण

आँचलिक उपन्यासकार अंचलवासियों के जीवन-स्पन्दन की धडकन को कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त करता है । स्वातंत्र्योत्तर युग में राजनीतिक जागरण, चुनावप्रणाली, शिक्षा प्रसार आदि के कारण सुदूर देहातों में रहनेवाले लोगों के विचारों में थोडा-बहुत परिवर्तन आ रहा है । धीरे-धीरे उनमें चेतना की लहर दौडने लगी है । वे धर्म के ठेकेदारों के चंगुल से मुक्त होने का प्रयास कर रहे हैं । वैज्ञानिक सभ्यता से परिचित किसानों की निराशावादी दृष्टि बदल रही है । वे अब काम में विश्वास रखने लगे हैं ।

राजनीतिक जागरण, वैज्ञानिक सुधार, शिक्षा-प्रसार के द्वारा ग्रामीण समाज-जीवन में परिवर्तन की कोशिश की जा रही है फिर भी उपेक्षित समाज परम्परागत आस्थाओं को बनाए रखने में गौरव अनुभव करता है । धर्म के प्रति उनकी धारणा ने अंधविश्वास का रूप धारण किया है । श्रेष्ठ साहित्यकारों ने उक्त वास्तविकता को अंकित किया है ।

डॉ. राहीजी ने "आधा गाँव" में गंगौली के शीआ मुसलमानों का वास्तव जीवन चित्रित किया है । शीआ मुसलमान प्रथा-परम्पराओं को बनाए रखने में श्रेष्ठत्व अनुभव करते हैं । अनेक परिवर्तनों के बावजूद भी उनके उत्सव-पर्वों में विशेष अंतर नहीं आया है । उनके धर्म सम्बन्धी धारणा में बदल नहीं हुआ है । वे परम्परा के अनुसार व्यवहार करते हैं ।

राजनीतिक दाँवपेंच और साम्प्रदायिकता के विष का विशेष प्रभाव गंगौली की जनता पर

नहीं हुआ है । पाकिस्तान–निर्माण के समय मुस्लिम लीग के कार्यकर्ताओं ने इस गलत धारणा का प्रचार किया था कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदू–मुस्लिमों को कुचल डालेंगे और जो बचेंगे उन्हें उनका गुलाम रहना पडेगा लेकिन इस बात का गंगौली के अधिकांश मुसलमानों ने विरोध किया कि हम हिन्दुओं का विरोध क्यों करें । इसीलिए उन्होंने पाकिस्तान बनने का समर्थन नहीं किया और न ही धर्म के आधारपर बननेवाले पाकिस्तान जाने की जीद की । इस समय गंगौली के मुस्लिमों का अपने जन्मभूमि के प्रति प्रेम दिखाई देता है । गंगौली के हाजीसाहब मुस्लिम लीग के कार्यकर्ता को पाकिस्तान निर्माण के विरोध में उत्तर देते हुए कहते हैं – "हम त अनपढ़ गँवार हैं । बाकी हमरे खयाल में निमाज खातिर पाकिस्तान –आकिस्तान की तनिको जरुरत ना है । निमाज के वास्ते खाली ईमान के जरूरत है । खुदा ब ताला साफ–साफ दिहिस हैं कि ए मेरे पैगम्बर कह द ई लोग से कि हम ईमान वालन के साथ हैं । अउरी कानी कउन त कहता रहा कि आप लोगन के जउन जिन्ना है ऊ निमाजो ना पढत"।(17)

जब मातादीन पंडित मुसलमानों के विरोध में भाषण देते हैं तब फुन्नन मियाँ कहते हैं – "ऊ.... की बात मत करो हमसे । अब हम का बतायें ? मन्दिर के नाम पर जमीन न दिये रहते त ...... देते।बाकी बीच में मन्दिर का नाम आ जावे से हमारा हाथ कट गया है ।" (18)

फौजी तन्नू को जब पाकिस्तान के पक्ष में वोट देने के लिए कहा जाता है तो वह कहता है – "मैं वोटर नहीं हूँ । तन्नू ने काली शेखानी की बात काटी, मैं मुसलमान हूँ । लेकिन मुझे इस गाँव से मुहब्बत है क्योंकि मैं खुद यह गाँव हूँ । मैं नील के गोदाम, इस तालाब और इन कच्चे रास्तों से प्यार करता हूँ क्योंकि ये मेरे ही मुख्तलिफ रूप है । मैदाने जंग में जब मौत बहुत करीब आ जाती थी तो मुझे अल्लाह जरूर याद आता था लेकिन मकबरा–मुअज्जमा या कर्बलाए–मुअल्ला की जगह मुझे गंगौली याद आती थी । और मैं यह सोचकर झल्ला जाता था, और रोने लगता था कि अब शायद मैं नील के गोदाम पर बैठकर गन्ना नहीं खा सकूंगा । और शायद अब मुझे आठवी की मजलिस का हलवा नहीं मिलेगा । अल्लाह तो हर जगह है फिर गंगौली और मक्का और नील के गोदाम और हमारे पोखरे और चाहे जम्जम में क्या फर्क है ?"(19)

मुस्लिम लीग का कार्यकर्ता तन्नू के उत्तर को सुनकर हैरान हो जाता है और तन्नू को

अपने कटु व्यंग्य से पराजित करना चाहता है परन्तु वह उसे और भी तीखा व्यंग्य सुनाकर मुँह बंद करता है "और मुझे शर्म भी नहीं आती । और शर्म आये क्यों ? गंगौली मेरा गाँव है । मक्का मेरा शहर नहीं है । यह मेरा घर है और काबा अल्लाह मियाँ का । खुदा को अगर अपने घर से प्यार है तो वह माजल्ला यह नहीं समझ सकता कि, हमें अपने घर से उतना ही प्यार हो सकता है ।"(20)

गंगौली की साधारण जनता धर्म के नाम पर बन रहे पाकिस्तान का समर्थन नहीं करती । उनके मन में जन्मभूमि के प्रति प्रेम है । वे किसी भी कीमत पर अपने गाँव-घर से अलग होना पसंद नहीं करती ।

धर्म के ठेकेदारों ने स्वार्थ लाभ के हेतु देवी-देवताओं का विभाजन कर विवाद की दीवारें खडी की है लेकिन साधारण लोगों के मन में मंदिर-मस्जिद, मठ-दर्गा, पीर-पैंगम्बर, देवी-देवता के प्रति एक जैसी भावना होती है । भगवान के पास मन्नत माँगनेवाले पीर के सामने गिडगिडाते हैं । उन्हें पीर या भगवान में कोई अंतर नहीं लगता परंतु साम्प्रदायिकता के चश्मे से देखनेवाले इसका विरोध करते हैं । गंगौली के फकरु की नानी फकरु को फौज में जाने से रोकने के लिए मस्जिद, ताजिए और बाबा के मठ पर मन्नत माँगती है । इन मन्नतों से वह अपना काम कराना चाहती है और फकरु के नाना इन मन्नतों को मनाना गुनाह समझते हैं ।"(21)

अज्ञानी, अशिक्षित लोग भूत-प्रेत, चुडैलों में अधिक विश्वास रखते हैं । मनुष्य अगर बीमार हो जाए तो वे उसे भूत-प्रेत की बाधा मानते हैं । समाज में विधवा स्त्री की मदद करने के बजाय उसे चुडैल कहकर पुकारते हैं । विभिन्न अंचलों के लोगों के मन में भूत-प्रेत, जिन्न आदि में विश्वास होने के कारण वे उनसे भयभीत होकर अनेक गलत धारणाओं एवं कहानियों में विश्वास रखते हैं । "आधा गाँव" में गंगौली के इमामबाडे के सम्बन्ध में अनेक बातें मशहूर थी । जैसे "हर जुमे की रात को इनमें जिन्नात मजलिस करते हैं । इसीकारण मोहर्रम के चाँद के दिनों को छोडकर रात में उधर से कोई गुजरता नहीं था क्योंकि गंगौली के लोग मानते थें कि मोहर्रम के दिनों इमामबाडा जिन्नातों के हाथ से निकलकर मनुष्यों के कब्जे में आ जाता है जिससे जिन्न बाधा नहीं सताती है ।" (22)

धार्मिक तीर्थांचलों, उत्सवों और मेलों का व्यक्ति के जीवनपर गहरा प्रभाव दिखाई देता है । श्रध्दालु लोग ईश्वर और भाग्य में अधिक विश्वास रखते हैं । जैसे मथुरा और अयोध्या के लोग प्रत्येक कार्य कृष्ण और राम को नामलेकर ही करते हैं। वहाँ के लोग तीर्थस्थलों, मेलों में जाते हैं पर शहरी वातावरण में पढा लिखा वैज्ञानिक सभ्यता से परिचित समाज ईश्वर के साथ जुडे कर्मकांडों, तीर्थस्थलों , पर्वो, मेलों आदि को मूर्खता, गँवारपन, फिजूलखर्ची, समय की बर्बादी मानता है । "आधा गाँव" उपन्यास में उत्तरप्रदेश के पूर्वी अंचल में बसे गंगौली गाँव के मुस्लिमों का अजान देना, ईद, बकरीद और मोहर्रम मनाने में अटूट विश्वास है । इन लोगों का सारा साल मोहर्रम की प्रतिक्षा करने में ही बीत जाता है । बकरीद के बाद ही मोहर्रम की तैयारी शुरू हो जाती है । बूढे लोग मोहर्रम के लिए काले कपडे सिलवाने और मरसिये गुनगुनाने लगते हैं । मोहर्रम के एक महीना पहले मातम की प्रैक्टिस शुरू हो जाती है । उत्तर और दक्खिन पट्टीवालों में मातम करते समय बेहोश हो जाने की कला में होड लागती है । "नवी मोहर्रम के आते आते तो अम्मू, चच्चा, बच्चा, शब्बर–दा, हम्माद–दा, फुन्नन–दा, अब्बू–दा, सिब्तू–दा, हामिद–दा, और हद तो यह है कि गोरे दा और सुज्जन दा भी बढ–बढकर मातम के हाथ लगाने लगते थें और मातम इतना जोरदार हो जाता कि हांडियों और कंबलों और फानूसों की बिल्लूरी कलमें मातम की गमक से काप उठा करती थी । और शहनशीन मे लगे हुए पटकों में जरी के फूल पिघलकर आँसू की बूँद बन जाते थे । बस सवाल रह जाता था बेहोश होने का – उत्तरपट्टी के मश्शू भाई को मातम करते–करते बेहोश हो जाने की कला आती थी ।"(23)

मोहर्रम के दसवे दिन तीसरे पहर तुरही , मरसिये, ताशे झांझों और लकडी के अखाडों के साथ ताजियों का जुलूस होता है । बडे ताजिये के पीछे–पीछे लकडी के ताजिये और उनके बाद कागज के मन्नती ताजियो का लश्कर होता है । बडे ताजियों के आगे अब्बूमियाँ कमर में पटका बाँधे , हाथ में चाँदी की मूठवाली एक छडी लिए सोजख्वाँनी करते हुए चलते हैं तो पीछे हजार पाँच सौ आदमी भी चलते हैं । फिर दोनों पहियों के ताजियों का जुलूस नुरूद्दिन शहीद के मजारपर पहुँचता है । "समाधि से जरा हटकर लकडी के अखाडेवाले अपना मजमा लदाकर गदके, बनैठी, बांक और तलवार के हाथ निकालने लगते हैं और फिर एकदम से कोई आदमी नारा लगाता है – "बोल मुहम्मदी" और सारा गाँव जवाब देता है –"या हुसैन"।(24)

इसप्रकार प्रत्येक अंचल में उत्सवों के धार्मिकमहत्व के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व भी होता है । इन मेलों में पान, पूडी, मिठाई, खिलौने बिसाती आदि की दूकाने होने के कारण बेराजगारों को इससे पैसे कमाने का अच्छा मौका मिलता है साथ ही प्रत्येक वर्ग के लोग बूढे -बच्चे इसका आनंद लूटते हैं ।

गंगौली के शीआ मुसलमानोंपर मोहर्रम का इतना प्रभाव पड़ा है कि मोहर्रम के दस दिनों में अगर कोई भी इनसान अच्छे कपडे पहने या किसी कारणवश हँसे तो भी वे पाप समझते हैं । पाश्चात्य शिक्षा लिया हुआ अली हादी मियाँ और उनके मित्र मोहर्रम के दिन हँसते हैं तो हकीमसाहब उन्हें कहते हैं - "खुदा गारत करे इन अँग्रेजों और उनकी भाषा की पढाई को चौपट कर दिया इन बेईमानों ने सब कुछ ।"(25)

गाँव के लोग मन्नत भूत-प्रेत में ज्यादा विश्वास रखते हैं । उन्हें दवाइयोंपर ज्यादा विश्वास नहीं होता क्योंकि वे अज्ञानी और गरीब होते हैं । वे झाड-फूंक ओर जन्तरमन्तर से अपना इलाज करवाते हैं । "आधा गाँव" मे सकीना लडके की कोशिश मे सात लडकियों को जन्म देती है । उसके पति फुस्सूमियाँ भी लडके के लिए गण्डे-ताबीज बँधवाकर मन्नतें माँगते हैं और यह आशा रखते हैं कि इससे लडका होगा । सकीना भी लडके के लिए बहुत सी मन्नतें माँगती है और साधु-फकीरों पर बहुत पैसे खर्च करती है ।

भारतीय जनता में यह विश्वास रहा है कि देवी-देवताओं को पूजनेपर अपनी अपूर्ण इच्छा पूर्ण होती है । इसी कारण प्राचीन काल से वे उनका पूजन करते आये हैं । प्रत्येक घर में अनेक देवी-देवताओं की मूर्तियाँ रहती हैं । अगर किसी घर पर कोई आपत्ति आ जाती है तो दैवी-प्रकोप मानकर देवी-देवताओं की पूजा करते हैं ।

"आधा गाँव" में लेखक राहीजी ने हिन्दू मुस्लिम एकता को प्रदर्शित किया है । गंगौली के हिंदू -मुस्लिम लोग भी एक दूसरे के देवी-देवताओं और पीर-पैगम्बरों को पूजते हैं । यहाँ मोहर्रम के दिनों ताजियों का जुलूस निकलता है तो यहाँ के निवासी जाति, धर्म के भेदभाव को भूलाकर श्रध्दा के साथ इसमें शरीक होते हैं और मन्नतें माँगते हैं । सभी जाति की "औरतें, बच्चों को बडे ताजिये के नीचे से निकालती मन्नतें माँगती, जारी पढतीं, और शरबत चढ़ाती ;

ये औरतें xxxxxx गाँव की राकिनें, जुलाहिनें, अहीरनें और चमाइनें होती थी ।"(26) ग्रामीण, समाज जाति-पंथ और धर्म के भेदभाव को भूलकर उत्सव -त्यौहारों में सम्मिलित होता है । गंगौली के मोहर्रम मे हिंदू हिस्सा लेते है, तो मियाँ लोग भी दशहरें का चन्दा देते हैं । मठ के बाबा को जहीर मियाँ ने पाँच बीघे की माफी दे रक्खी थी ।

हिन्दी के आँचलिक उपन्यास साहित्य देखनेपर हमें धर्म के परम्परागत स्वरूप में थोडा-बहुत परिवर्तन दिखाई देता है । पुरानी मान्यताओं के स्थान पर नई मान्यताएँ आ रही हैं । धार्मिक क्षेत्र में विज्ञान का प्रभाव बढ रहा है इससे लोगों में धर्म के प्रति श्रध्दा और विश्वास कम हो रहा है तथापि कई लोग शिक्षा प्राप्ति के बाद भी अंधविश्वासों को स्वीकरने में गौरव अनुभव करते हैं । शिक्षा प्राप्ति से वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रोत्साहन मिलेगा इस प्रकार की धारणा थी परन्तु फल कुछ विपरित दिखाई देता है ।

"आधा गाँव" उपन्यास में ईश्वरवाद, बहुदेव-वाद, भूत-प्रेत, चुडैल, साधू-महन्त में विश्वास, पाप पुण्य की धारणा, हिन्दू-मुस्लिमों के परस्पर सम्बन्ध आदि सभी का चित्रण है । समाज-जीवन का वास्तव चित्रण "आधा गाँव" में उपलब्ध होता है ।

सांस्कृतिक स्वरूप

आँचलिक उपन्यासों में वहाँ के जीवन और संस्कृति का जीवन्त रूप होने के कारण वहाँ का जीवन दर्शन हमें मूल रूप में मिलता है । समाज की परम्परागत मान्यताएँ वहाँ के धार्मिक -सामाजिक विश्वास , रीति-रिवाज, वेश-भूषा, भाषा और रंजन प्रणालियाँ लोकसंस्कृति के अभिन्न अंग हैं । लोक-कथा, लोक-गीत, लोक-नृत्य, लोक-कला, लोक उत्सव, धार्मिक व्रत-त्यौहार आदि में अंचलवासियों की आश-आकांक्षा, आस्था-विश्वास आदि लोक सांस्कृतिक तत्वों की अभिव्यक्ति होती है ।

लोककथाएँ परम्परागत होती है वे एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्तिद्वारा उत्तराधिकार में प्राप्त हुई हैं । गीति कथाओं में भी लोककथाओं की तरह व्यक्ति के जीवन के विविध रूप होते हैं ।

उनमें ग्रामीण जनता की कोमल भावनाएँ होती हैं । इन दोनों मे व्यक्ति अपने सुख-दु:ख, उमंग, उत्साह व्यक्त करते हैं । इससे एक दूसरे को समझने का मौका मिलता है । आपस में सहानुभूति और संवेदना के भाव निर्माण होते हैं । ये लोकगीत व लोकनृत्य विभिन्न धार्मिक, सामाजिक परम्पराओं, मान्यताओं, भिन्न परिस्थितियों एवं मन के विविध भावों से सम्बन्धित होते हैं जिनकी अभिव्यक्ति आँचलिक उपन्यासों में मिलती है ।

"आधा गाँव" में अनेक धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन से जुडे उत्सव पर्वों एवं गीतों तथा कथाओं का वर्णन है । उपन्यासकार ने विवाह के अवसर पर गाये जानेवाले गीतों का चित्रण किया है । प्राय: सभी जाति-धर्म के लोगों में विवाह को अत्याधिक महत्व दिया जाता है । विवाह उत्सव के रूप में बडी धूमधाम से मनाया जाता है । विवाह से वर-वधू एक सूत्र में बँधकर नया जीवन शुरू करते हैं । परम्परा से वर पक्ष के लोग वधू के घर बरात लेकर आते हैं । दुल्हन के रिश्तेदार बरातियों का उत्साह उमंग और सम्मान के साथ स्वागत करते हैं । इस समय पर गाये; जानेवाले गीतों में हास-परिहास रहता है । "आधा गाँव" में इसका चित्रण इसप्रकार है –

"बडी धूम गजर से आया री बना...
... सब लोग कहें महतर का जना ।"(27)

साथ ही गंगौली में बेरोजगारी के कारण कलकत्ता गए हुए पति के बारे में युवतियाँ ये गीत गाती हैं – "लगा झूलनी का धक्का,

बलम कलकत्ता चले गये ।"(28) मेले-त्यौहारों एवं शादी-ब्याह के समय गाये जानेवाले गीतों से सामाजिक परिवेश और समाज की मानसिकता एवं समस्याएँ ध्वनित होती हैं । "आधा गाँव" उपन्यास में इसप्रकार के कई एक गीतों का अंकन हुआ है ।

"आधा गाँव" उपन्यास सांस्कृतिक दृष्टि से समृध्द और पुरातन है । उत्तरप्रदेश की भोजपुरी भाषा का प्रयोग करके राहीजी ने इस उपन्यास को जीवन्त रूप में सामने रखा है । शीआ मुस्लिम समाज का समग्र जीवन अंकित करने में लेखक को सफलता मिली है ।

5. लोकजीवन और नवीन सामाजिक चेतना

"आधा गाँव" उपन्यास में लेखक राही मासूम रजाजी ने गंगौली मे स्थित शीआ सम्प्रदाय का सजीव और गतिशील समाजजीवन चित्रित किया है । इस उपन्यास में सन् 1937 ई.से सन् 1952 ई. तक के पन्द्रह वर्षो की अवधि में होनेवाली घटनाओं और परिवर्तनों एवं बदलते हुए आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक मूल्यों का चित्रण किया है । जिससे गंगौली के शीआ समुदाय का लोकजीवन अभिव्यक्त हुआ है । पाकिस्तान मुस्लिमों के लिए बन जाने के पश्चात् भी गंगौली के शीआ मातृभूमि प्रेम के कारण पाकिस्तान नहीं जाते ।

जमींदारी उन्मूलन के पश्चात् वैभवसम्पन्न लोग गरीब बन जाते हैं इससे उनकी शान में थोडी कमी दिखाई देती है । गंगौली के जमींदार परिस्थिति के अनुरूप खूद को थोडा बहुत बदल लेते हैं । पैसे कमाने के लिए वे कुछ छोटा-मोटा कारोबार शुरू करते हैं । आर्थिक स्थिति बिघडनेपर रक्त -शुध्दता का प्रश्न भी कम महत्वपूर्ण हो जाता है । खानदान और रक्तशुध्दता का घमण्ड करनेवाले जीविका चलाने के लिए कुछ भी करने को मजबूर हो गए हैं । परम्परागत विचारों को बनाए रखने की कोशिश करनेवाले, पुरानी पीढ़ी और युग के साथ चलने का आग्रह करनेवाली नयी पीढी में टकराव-संघर्ष की स्थिति निर्माण हो गई है । हकीम अली कबीर और कम्मोद्वारा नई-पुरानी पीढी का अंतर स्पष्ट होता है ।

गंगौली में धीरे-धीरे परिवर्तन होता हुआ दिखाई देता है । पढी-लिखी सईदा धन कमाने के लिए घर छोडकर चली जाती है । उसका पढना-लिखना तथा धन कमाना गंगौली के लोगों को पसंद नहीं था । परन्तु बिगडती आर्थिक दशा और नई चेतना का प्रभाव धीरे-धीरे लोगों की मानसिकता में परिवर्तन लाता है । सईदा को कोसनेवाले उसकी प्रशंसा करते हैं । उसका उदाहरण आदर्श के रूप में गाँव के सामने रखा जाता है ।

पर्दे में रहनेवाली मुस्लिम नारी आर्थिक स्वावलम्बन के लिए पर्दा प्रथा से मुक्त होकर कार्य करने लगी है । उसका धन कमाना समाज में प्रतिष्ठा का कारण बन गया है । सईदा के चित्रणद्वारा लेखक ने स्पष्ट किया है कि नारी शिक्षा और आर्थिक स्वावलम्बन से नारीमुक्ति संभव है। ।

जमींदारी उन्मूलन के कारण गंगौली के शीआ मुस्लिमों की आर्थिक दशा बिगड चुकी है । सईदा की कमाई को हेय दृष्टि से देखनेवाला उसका पिता विवशतावश उसकी कमाई खाता है । मोहर्रम की तैयारी में महीनों पहले से धन लूटनेवाले आर्थिक स्थिति के कारण अपनी उत्सवप्रियता को काबू में रखते हैं । पहले की तरह फिजूल खर्च नहीं करते । नयी पीढी पुरानी पीढी से काफी बदल गई है । इस बदल को दिखाने के लिए लेखक ने अंत में एक चित्र प्रस्तुत करते हुए लिखा है – "एक छोटा सा बच्चा बगल में बस्ता लटकाए हुए तेजी से भागता हुआ गुजर गया । फुस्सू मियाँ उसे देखते रहें, यहाँ तक की वह बायी तरफ मुडकर उनकी नजरों से ओझल हो गया ।"(29) इससे नयी पीढी का नये मार्ग पर चलने का संकेत मिलता है ।

नयी पीढी परिस्थिती के कारण बदल रही है । पुरानी पीढी की तरह उत्सव-प्रियता नयी पीढी में नहीं है । मँहगाई, वैज्ञानिक सभ्यता से परिचय आदि के कारण ऐसा हुआ है ।

6. वास्तववादी दृष्टिकोण

राही मासूम रजा जी ने "आधा गाँव" उपन्यास में वास्तवादी दृष्टिकोण को अपनाया है । यह चित्रण सचमूच यथार्थ जान पडने के लिए लेखक को एक ऐसे कथावाचक की जरूरत थी जो उस समाज को भीतर से अच्छी तरह से जानता हो और लेखक उस अंचल के साथ-साथ उस सम्प्रदाय के निवासी और सदस्य होने के कारण गंगौली के समाज की भीतर से जानते हैं और अपने अनुभवों और जानकारियों के सहारे इस समाज का चित्रण करते हैं जो सचमूच ही सजीव, स्वाभाविक अपने जैसा ही लगता है । लेखक स्वयं एक शीआ मुस्लिम होने के कारण उन्होंने शीआ समाज का सिर्फ अच्छा, सरल वर्णन ही नहीं किया अपितु वहाँ के डकैत, भेदभाव माननेवाले, झूठे-आडंबरी लोगों का वर्णन किया है, जो सच्चा है । उनके अज्ञान, अंधविश्वास को बताया है । उन्होंने अपनी सामाजिक विरासत और माहौल का जीता-जागता चित्रण प्रस्तुत किया है । गंगौली का हर छोटा-बडा पात्र गंगौली के पूर्ण जीवन को चित्रित करने में सहायक है । अनेक छोटी-बडी घटनाएँ, वहाँ के लोग, उनका जीवन सबकुछ इस मोहर्रम के वर्णन में हमें मिलता है । त्यौहार, वहाँ के लोगों का इन त्यौहारों में हिस्सा लेना, उनका देशप्रेम देखकर यह परिवेश हमारी दृष्टि व्यापक करता है ।

राहीजी ने अपने उपन्यास में स्त्रियों के जनानखानों तक का वर्णन किया है साथ ही ऐसी भाषा का प्रयोग किया है जो गंवारू गालियों से भरी हुई है जिसे साहित्य स्वीकार नहीं करता । परन्तु इन पात्रों के मुँह अगर सभ्य, सुशिक्षित भाषा को भरे तो यह चित्रण स्वाभाविक नहीं लगेगा इसीलिए जिसका प्रयोग किया है वह वहाँ के व्यक्तियों के शील और शैली को प्रस्तुत करती है जो इस उपन्यास की माँग है ।

7. समाज के सभी वर्गों का समाजवादी दृष्टि से चित्रण

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने लगभग सौ से भी अधिक पात्रों को चित्रित किया है । कुछ पात्र मोहर्रम में मश्गुल है तो कई घरेलु समस्या से परेशान, कई सिर्फ नाममात्र है तो कई महान उद्देश्य लेकर सामने प्रकट हुए हैं । उपन्यास का हर छोटा-बडा पात्र गंगौली के जीवन को प्रस्तुत करने में सहायक है । यहाँपर अमीर-गरीब, खेतों में काम करनेवाले मजदूर और जमींदारो को चित्रित किया है । उस समय जमींदारो को छोडकर अन्य किसी को भी अपने मत, विचार प्रकट करने का अधिकार नहीं था । इन जमींदारों का अधिकार पूरे गाँव पर चलता था यहाँ गरीब जनता की कोई नहीं सुनता था । जमींदार पैसों के बलपर गरीब जनता को लूटते थें किसानों का शोषण करते थें सभी कानून तो इनके हाथों में होते थें । जमींदारी उन्मूलन के बाद इन जमींदारों के विशेषाधिकार, साधन, आर्थिक-साधन छीन गये । और गाँवो में परिवर्तन आने लगा ।

राहीजी ने "आधा गाँव" में शीआ सम्प्रदाय का वर्णन किया है । जहाँ अधिकतर मुस्लिम जमींदार है उनका रहन-सहन, सामाजिक मर्यादा, विशेषाधिकार प्रस्तुत किया है । किसान-जमींदार लोगों का चित्रण करते समय लेखक ने किसी भी प्रकार की भेदभाव की भावना नहीं रखी है । समानदृष्टि से इन सभी लोगों का चित्रण किया है जहाँ जमीदारों की शान, प्रतिष्ठा आदि के बारे में वर्णन किया है वहाँ साथ में ऊँच-नीच भेदभाव माननेवाले झूठे- डकैती डलवानेवाले आडंबरी लोगों एवं उनके दोषों का भी वर्णन है । जमींदार शोषण के साथ-साथ सहयोग भी करते हैं । मोहर्रम में हिन्दू मुसलमान आनंद से हिस्सा लेते हैं । "आधा गाँव" में चित्रित चमार परूसराम जैसा अछूत काँग्रेसी नेता जमींदारों के सामने कुर्सीपर शान से बैठता है यह दिखाकर राहीजी ने अत्यन्त सामान्य व्यक्ति को भी अपने उपन्यास में महत्वपूर्ण स्थान देकर बदलाव दिखाया है ।

राजनीतिक आजादी, चुनाव–प्रणाली, प्रौढ मताधिकार, शिक्षा प्रसार आदि के कारण सदियों से उपेक्षित, अपने अधिकारों से अपरिचित लोगों में चेतना की लहर निर्माण हो गई जिसका चित्रण काँग्रेसी नेता के रूप में डॉ. राहीजी ने किया है ।

८. **युग–चेतना की अभिव्यक्ति**

१. **शैक्षणिक स्वरूप**

समाज के विकास के लिऐ शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है । हिन्दी के आँचलिक उपन्यास साहित्य में भारतीय ग्रामीण सामाजिक व्यवस्था के शैक्षणिक स्वरूप का चित्रण मिलता है । भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले बहुत लोग निरक्षर थे । किसानों पर जनता निर्धारित होने के कारण किसान अपनी खेती में ही अधिक समय बिताते थें । उन्हें खेती से पैसा मिलता था और इससे वे अपनी गृहस्थी संभालते थें । इससे उन्हें पढने–लिखने का महत्व मालूम ही नहीं हुआ और समय भी नहीं मिलता था । जिस गाँव में प्राइमरी स्कूल होते है वहाँ दो–तीन मील दूर से लडके पढने आते हैं ।

हिन्दी के आँचलिक उपन्यासों में समकालीन शैक्षणिक व्यवस्था का चित्रण मिलता है । स्वाधीनता से पहले पूरे गाँव में आठ या दस व्यक्ति पढे लिखे मिलते थे । वे ही पाठशाला चलाते थें । छात्रों के सवालों और समस्याओं का समाधान उनके बस की बात नहीं थी सवाल पूछनेवाले या समस्या का समाधान चाहनेवाले छात्रों की बूरी–तरह से पीटाई करने में अध्यापक कर्तव्यपूर्ति मानते थें । "आधा गाँव" में मौलवी साहब भी छात्रों को पढाने से उन्हें पीटते अधिक थें । डॉ. राहीजी कहते हैं – "हमारे मौलवी मुनव्वर को पढाने से ज्यादा पिटाई करने में मजा आता था । वह हमारे "डेली अनाऊन्स" की इकन्नी भी हमसे ले लिया करते थे, इसलिए हम लोगों का बचपन बड़ी गरीबी से गुजरा और शायद यही वजह है कि खरी फरोख्त की कला न मुझे आती है न भाईसाहब को ।"(30)

स्वतंत्रता के बाद सरकार ने ग्रामीण भागों में प्राथमिक और माध्यमिक पाठशालाएँ खोली हैं । सरकार, समाज सुधारक और नेतागण जान गए हैं कि जब तक देश की जनता निरक्षर

अज्ञानी रहेगी तब तक राष्ट्र की उन्नति असंभव है । ग्रमीण शिक्षा–प्रसार के मार्ग में अनेक बाधाएँ हैं । सबसे प्रमुख बाधा अर्थाभाव और अनास्था है । – – –
। अध्यापक को उचित वेतन नहीं मिलता परिणामतः उनका अध्यापन में मन नहीं लगता । गंगौली के "मौलवी साहब भी छात्रों को उर्दू की प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने पर बहुत ही अल्प मात्रा में धन पाते है ।"(31)

परम्पराप्रिय भारतीय समाज शिक्षा प्रसार या नारी शिक्षा का विरोध करता है । नारी–शिक्षा का विरोध करनेवाला समाज मानता है कि शिक्षित नारी के कारण सामाजिक समस्याएँ निर्माण हो जाएँगी ओर समाज में अनियमितता बढ़ जायेंगी ।

अनेक प्रकार की बाधाओं और समस्याओं का सामना कर हमारी सरकार शिक्षा प्रसार करने लगी है । काफी हदतक सरकार को सफलता मिली है । शिक्षा प्राप्त जनता में जागृति की लहर दौडने लगी है । उनमें नयी दृष्टि से देखने की भावना विकसित हो गई है ।

गंगौली में शिक्षा का प्रसार धीरे–धीरे होने लगा है । शिक्षा का विरोध करनेवाले शिक्षा प्रसार में सहयोग दे रहें हैं । खोखला खानदानी घमण्ड करनेवाले नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व पर प्रतिबंध लगाकर उसके विकास के सारे मार्ग बन्द करते हैं । रक्तशुध्दता का घमण्ड करनेवाले गंगौली के जमींदार नारीशिक्षा का विरोध करते हैं । उसे पर्दे में रखते हैं । घर की दहलीज से बाहर कदम रखने की नारी को अनुमती नहीं देते। फिर भी सईदा जैसी लडकी परम्परागत बंधनों को ठुकराकर अलिगढ विश्वविद्यालय में पढ़ती है । वह पैसे कमाकर अपने परिवार का बोझ हल्का करती है । उसकी कमाई देखकर विरोध करनेवाले लोग चूप हो जाते हैं ।

11. नारी की सामाजिक स्थीति

आँचलिक उपन्यासों में नारी की परम्परागत और परिवर्तित स्थिति को चित्रित किया है । गाँव में स्त्री को पुत्री, बहन, माता और पत्नी के रूप में सम्मान दिया जाता है । प्राचीन काल से आज तक स्त्री को गौणत्व दिया जाता रहा है । उसे शिक्षा नहीं दी जाती । उसका कार्यक्षेत्र बच्चों की परवरिश और रसोई तक ही सीमित माना जाता है ।

उसके सारे अधिकार छिनकर उसे परावलम्बी बनाया जाता है । शिक्षा का अभाव, परम्पराप्रिय मनोवृत्ति, आर्थिक परवशता और संयुक्त परिवार पध्दति के कारण उसका व्यक्तित्व दब गया है । साथ ही धर्म और रूढी-परम्परा के कटघरे में उसे जकडकर शोषित बनाने की प्रक्रिया अनवरत रूप से शुरु है । बालविवाह, विधवा विवाह प्रतिबंध, बहुपत्नी प्रथा आदि के कारण उसका जीवन नारकीय बन गया है । पुरुष-प्रधान भारतीय समाज में बेटे को कुलदीपक मानने के कारण बेटे को जन्म देना नारी के लिए अनिवार्य बन गया है । बेटे को जन्म न देनेवाली नारी को बार-बार अनचाहे गर्भ को ढोना पडता है ।

बार-बार लडकियों को जन्म देनेवाली सकीना अपनी सास से हर पल जली-कटी सुनती है । रब्बन बी सकीना से कहती है - "लडकी-पे-लडकी पैदा त किये जा रही हो - बाकी ई घर में रोकड ना धरा हे । सकीना इन कोसनों को पी जाती ।"(32) सकीना का पती बेटा पैदा करने की धुन में बेटियों से घर भरता है । वह पुत्रप्राप्ति के हेतु मन्नते माँगता है । सकीना भी साधु-फकिरों से आशीर्वाद पाने के लिए ढेर सारे रूपए खर्च कर चुकी है । मन्नतें और साधु-फकिरों से निराश सकीना का दुआ - ताबीज पर से विश्वास उठ चुका है ।

पति की इच्छापूर्ति नारी का धर्म माना जाता है । पति की इच्छापूर्ति में असमर्थ पत्नी को कठोर यातनाओं का शिकार होना पडता है । गंगौली के रज्जू के पिता अपनी बात बातपर पत्नी की बुरी तरह से पीटाई करता है ।

स्वतंत्रतापूर्व जो स्थिति स्त्रियों की रही है आज भी वही स्थिति हमें दिखाई देती है । इस स्थिति का एक कारण दहेज प्रथा है । दहेज न दे सकने के कारण माता-पिता अपनी पुत्री का विवाह अधिक आयुवाले वर से करतें हैं जिससे वैधव्य और वेश्यावृत्ति जैसी समस्याएँ निर्माण होती है । "आधा गाँव" में झंगटिया-बो का विवाह इसका उदाहरण है । उसका विवाह बूढे व्यक्ति के साथ किया जाता है ।

अनमेल विवाह के कारण परिवार में झगडे होते रहते हैं साथ ही समाज में विधवाओं की संख्या बढती है । विधवा विवाह प्रतिबंध के कारण विधवा का जीवन शापित एवं परावलम्बन की

दर्द भरी कहानी बन गया है । हिन्दुओं की तरह मुसलमानों में भी विधवाओं की स्थिति है । मुसलमानों में भी विधवा स्त्री को सामाजिक पर्वो–त्यौहारों एवं परिवार के आनंद उल्लास के प्रसंगों में शामील होने नहीं दिया जाता । वह अच्छे कपडे, गहने नहीं पहन सकती । विधवाओं का उत्सवों में शामील होना अशुभ समझा जाता है । "आधा गाँव" में हुसैन अली मियाँ की बहन उम्मुल हबीबा इसका उदाहरण है । वह बीस साल से सफेद कपडे पहन रही थी । शादी के तीसरे दिन ही वह बेवा हो गयी । शादी–ब्याह के मौकों पर उसे छूते तक नहीं, कंदूरी के फर्श पर उसकी परछाई तक नहीं पड सकती थी । दुल्हन के कपडों को वह छू नहीं सकती । इसप्रकार के चित्रों को प्रस्तुत कर राहीजी ने विधवा स्त्री के जीवनपर प्रकाश डाला है ।

बदलते परिवेश के कारण लोगों का विवाह के बारे में सोचने का ढंग कुछ बदल गया है । प्रौढ–विवाह का समर्थन, बाल–विवाह पर रोक, अनमेल विवाह विरोध, आंतरजातीय विवाह, विधवा विवाह समर्थन, प्रेम विवाह आदि के कारण नारी की स्थिति में परिवर्तन आ रहा हैं । शिक्षा के प्रसार ने उसके बन्द दरवाजे खोल दिए हैं । वह नौकरी –व्यवसाय में सफलता पूर्वक आगे बढकर अपनी भूमिका अदा कर रही है । वह धन कमाकर परिवार का बोझ अपने कंधोंपर उठा रही है । वह अपने वेतन से कुकर, मिक्सर, टी.वी, व्ही.सी.आर. जैसें अत्याधुनिक साधनों को खरीद कर अपने श्रम को कम करने की कोशिश कर रही है । आज की नारी घर–परिवार के बंधनों से मुक्त होकर सामाजिक कार्यों में सम्मिलित हो रही है । वह अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व का परिचय देने की कोशिश कर रही है । काफी हद तक उसे सफलता मिल रही है । आर्थिक स्वावलम्बन, कानूनी प्रयास, समाज सुधारकों के प्रयत्न आदि के कारण यह संभव हो रहा है । वह "अबला" के परम्परागत दायरे से मुक्त हो रही है । सामाजिक जीवन में उसको प्रतिष्ठा –सम्मान दिया जा रहा है ।

राहीजी ने स्त्रियों की मानसिक स्थिति का वर्णन कर परिस्थितीनुसार परिवर्तन भी दिखाया है । पहले गंगौली गाँव में लडकियों का हिंदी लिखना – पढ़ना अच्छा नहीं समझा जाता था फिर भी सईदा अलीगढ विश्वविद्यालय से पढकर टीचर हो गई है । वह अपने परिवार का खर्च चलाती है । पहले पहले गाँव की सभी औरतें उसे कोसती थी पर बाद में उसका रहन–सहन देखकर

उसकी तारीफ करने लगती हैं। यहाँपर राहीजी ने स्त्रियों में आये परिवर्तन उनका जीवन सम्बन्धी दृष्टिकोण बताया है। उन्होंने आर्थिक स्वावलम्बन और नारी शिक्षा के महत्व का परिचय दिया है।

९. स्थानीय बोली

भाव को अभिव्यक्त करने का माध्यम भाषा ही है। आँचलिक उपन्यासों में उस अंचल की विशिष्ठता का पता उनकी भाषाद्वारा ही चलता है। आंचलिक जीवन की विशिष्ठता पर भाषा की विशिष्ठता अवलंबित होती है। प्रत्येक व्यक्ति की बोली भाषा अलग-अलग रहती है। व्यक्ति की शिक्षा, संस्कार, उसका व्यवसाय समाज में उसकी स्थिति, वातावरण आदि अनेक कारणों से व्यक्तिबोली में अंतर आता है। व्यक्ति बोली भाषा की ही छोटी इकाई है। व्यक्ति अपनी इच्छानुसार भाषा को बदल नहीं सकता उसपर सामाजिक नियंत्रण होता है। जब बोली कई कारणों से प्रमुखता प्राप्त करती है तो भाषा कहलाने लगती है।

आँचलिक उपन्यासों में ग्रामीण भाषा का प्रयोग करना ही आवश्यक है क्योंकि इससे उस अंचल का चित्रण सजीव लगेगा अगर उन पात्रों के मुँह नागरी भाषा ठूस दी जाए तो यह चित्रण कृत्रिम लगेगा। स्थानीय बोली से उस अंचल का स्थानीय रंग हमारे सामने प्रस्तुत होता है।

"आधा गाँव" उपन्यास में राहीजी ने गंगौली की स्थानीयबोली "भोजपुरी-उर्दु" का प्रयोग किया है। गंगौली में स्थित शीआ लोग उर्दू नहीं बोलते तो वे भोजपुरी बोलते हैं जो गाजीपुर क्षेत्र की बोली है। गंगौली में जो लोग खडीबोली उर्दू बोलते हैं ग्रामीण लोग उनका मजाक उडाते हैं लेखक इस बारे में कहते हैं कि ~~मुझे~~ 'वाली' कक्का दास्तान ज्यादा अच्छी लगती थी, मुमकिन है कि इसकी वजह यह हो कि वह यह दास्तान लखनऊ की धूली-धुलाई उर्दू में नहीं सुनाया करते थें, बल्कि भोजपुरी उर्दू में सुनाया करते थें।"(33)

गंगौली के हम्मादमियाँ खडीबोली बोलते थें। तो गाँव के लोग उन्हें कहते कि इसी खडीबोली की वजह से हम्मादमियाँ धीरे-धीरे उत्तरपट्टीऔर दक्खिनपट्टीके लोगों से दूर होते जा रहे हैं। लोगों का उनके बारे में कहना था कि जब वे घर आये तो अपनी जबान में बात करें

बाहर अगर अँग्रेजी -उर्दू या फारसी चाहे कोई भी जबान में बात करें । खडीबोली में घर की औरतें दिल की बात बताने से डरती है । हम्मादमियाँ जब घर में हिंदी बोलने लगते है तब उनकी बिवी उन्हें डराती है और कहती है - - - - "का तूम लोगों का दिमाग खराब हो गवा है .... उन्हें भाड में जाए दे ... निखौंदी बोली ।"(34) और अपने पति से यह कबूल करा लेली है - "मैं का करूँ, तोहरी जबान हम्में आई ना, हमरी बोली त हम्में बोले ना देतेयो ।"(35)

लेखक ने आगे चलकर उपन्यास के पात्र मन्नोद्वारा हिंदी का प्रचार और प्रसार बताया है। नई पीढीकी पढी-लिखी लडकियाँ हिंदी सीख रही है और देवनागरी लिपि में नमाज भी लिख रही है । वे धर्म को जबान से मिलाकर नहीं देखती, जब कि बुढ्ढी औरतें अपने गाँव की बोली के सिवाय और कुछ नहीं जानती । गाँव की सभी औरतें मन्नो को कोसती हैं । वे हिंदी सिखना या लिखना धर्म के अनुसार पाप समझती हैं । वे कहती हैं - "अब अल्लाह रसूल का नमवा मुई हिंदी में लिखा जाए लगा ।"(36) रब्बन-बी हिंदी के बारे में पूछने लगती है - "उर्दू का नाम ते सुने रहियों, अरबी -फारसी का नाम भी सुने रहियों .... बाकी ए कौन जुबान निकल आयी है ।"(37)

गंगौली के शीआ मुस्लिम हिंदी के साथ-साथ उर्दू का भी विरोध करते हैं । इससे पता चलता है कि गंगौली के शीआ कट्टर परंपरावादी होने के कारण वे सिर्फ अपनी जबान भोजपुरी को ही महत्व देते हैं । दूसरी भाषा का प्रयोग उनकी दृष्टि में धर्म के अनुसार पाप है । लेखक के अनुसार गंगौली के पात्रों की "भोजपुरी-उर्दू" की माँग स्वाभाविक है क्योंकि गाँव के लोग अजनबी भाषा को पसंद नहीं करते । यह कथा "खडीबोली उर्दू" में कही है पर पुस्तक देवनागरी लिपि में छपी है पर मुहर्रम की मजलिसों में पढी जानेवाली कविताओं को उर्दू में न लिखकर देवनागरी लिपि में लिखी है तो पढते समय उसका गहरा प्रभाव नहीं पडता । लेखक का इस बारे में मत है कि - "नौहा वही था, लफ्ज वही थे, लहजा वही था । बस एक लिपि की अजनबीयत ने बिपियों को चिढा दिया था । चुनांचे न किसी की आंख नम हुई और न किसी ने बैन किया ।"(38)

इसप्रकार राहीजी ने उर्दू और भोजपुरी दोनों को मिलाकर एक नया रंग उभारा है । पात्रों की बातचित में ऐसे पद अथवा मुहावरें आये हैं जिन्हे सुसंस्कृत समाज पसंद नहीं करता । "

गालियों के द्वारा पात्रों के आवेश को चित्रित किया है जैसे – जब हकीम साहब कहते हैं कि मँगरे पर वाली जमीन लेने के फिकिर में हम्माद है तो तभी हुसैनअली मियाँ गुस्से में आकर कहते हैं –

"ऊ का जोत वय्य हें ओकों ? ....

"लाला की त काँगरेसियन से गाँड फट रही," हुसैन अली मियाँ ने कहा, ...

....

"तू सुखरमवा बहनचोद को बुला के समझा काहे ना देत्यो ?"(39)

गालियों का प्रयोग कथानक की आवश्यकता नुसार किया गया है जिससे कथानक यथार्थ लगता है । जीवन के अच्छे पक्ष के साथ कुरूप पक्ष भी सामने आया है । गालियोंद्वारा पात्रों का सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर हमारे सामने आया है । ये गालियाँ वहाँ की आपसी बातचीत का तेवर है । साथ ही भोजपूरी उर्दू की विशेषता है । अपने उपन्यास "आधा गाँव" की भाषा में राहीजी पूर्ण सफल हो गये हैं । उपन्यासकारने लोकप्रचलित मुहावरों लोकोक्तियों का प्रयोग कर उपन्यास को रोचक बनाया है । स्थानीय भाषा आँचलिक उपन्यास की शक्ति–पहचान और सीमा भी है । "आधा गाँव" उपन्यास से इसका पता चलता है ।

स्थानीय भाषा प्रयोग के कारण उपन्यास के पात्र सजीव बन गए हैं । घटनाओं की प्रभाव क्षमता बढ़ गयी है । कुल मिलाकर सम्पूर्ण आँचलिक जीवन पाठक के सामने रखने की क्षमता राहीजी की भाषा में है ।

10. प्रादेशिक अस्मिता और आत्मीयता का भाव

आँचलिक उपन्यासों की यह महत्वपूर्ण विशेषता मानी जाती है । "आधा गाँव" उपन्यास में लेखक राही मासूम रजाजी ने तटस्थता से अँग्रेज शासन काल से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के घटनाओं का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया है ।

अँग्रेज शासन काल में अँग्रेजों ने अपने स्वार्थ के लिए हिन्दू–मुस्लिम दंगे और जातीय द्वेष निर्माण किया । सन् 1909 ई. में. "मार्ले–मिण्टो सुधार" अधिनियम पारित हुआ । इससे देश में

प्रथम बार साम्प्रदायिक चुनाव प्रणाली का सूत्रपात हुआ । मुस्लिमों को अपना अलग प्रतिनिधि चुनने का अधिकार दिया गया । सन् 1937 ई.मे हिन्दू–मुस्लिम संघर्षो की संख्या अधिक हो गई जिसका कारण वैधानिक समस्याओं के प्रति मतभेदों में तीव्रता थी । सन् 1940 ई.में लाहौर अधिवेशन हुआ जिसमें पाकिस्तान की मॉंग को आगे बढ़ाया । सन् 1946 ई में भारत में चुनाव हुए । इसमें मुस्लिम लीग को काफी सफलता मिली उस वक्त अनेक स्थानोंपर साम्प्रदायिक दंगे हो गये । पहले कॉंग्रेस ने पाकिस्तान मॉंग का विरोध किया । अन्त में परिस्थिति से विवश होकर स्वीकृति दी फलतः देश का बँटवारा हो गया । 15 वर्षो की अवधि में जिन हालातों से भारत गुजर गया है इसका वर्णन लेखक ने आत्मीयता के साथ किया है । साथ ही शीआओं के व्यक्तिगत जीवन एवं समाज जीवन का तटस्थ, निष्पक्षता से वर्णन किया है ।

"आधा गॉंव" उपन्यास का कथावाचक उन मुसलमानों में से है , जो मानते हैं कि जिन्ना के नेतृत्व में मुस्लिम लीग ने गलत राजनीति का प्रचार किया और पद एवं अधिकारों के लिए मुसलमानों ने इस राजनीति के सहारे अपने स्वार्थ सिध्द किए । इस उपन्यास में पराधीन भारत में अँग्रेजी सरकार और पुलिस के शोषण और अत्याचार की कहानी के साथ भारतमाता की कहानी भी है । मुस्लिम लीग का प्रभाव, मुस्लिम आबादीवाले प्रदेश के नौजवानोंपर अधिक था । गंगौली के लडके जो अलीगढ पढने जाते थे वे जिन्ना साहब की राजनीति में पूरी तरह रंगे हुऐ थें । वे छुट्टियों में साम्प्रदायिकता का जहर लेकर ही छुट्टियॉं मनाने गॉंव आते थे । हम्माद मियॉं का बेटा अब्बास गंगौली में आता है तो गफूरन बुआ से कहता है कि, एक बार पाकिस्तान बन जाए तो मुसलमान ऐश करेंगे । परन्तु इन साम्प्रदायिक झगडों से दूर रहनेवाले लोगों के लिए पाकिस्तान से कोई मतलब नहीं हैं । पाकिस्तान निर्माण के पश्चात् भी गंगौली के कुछ शीआ मुस्लिम पाकिस्तान जाने के लिए तैयार नही हैं । उनके मन में जिन्ना की राजनीति और पाकिस्तान के प्रति द्वेश भावना निर्माण हो गई है । उनके मतानुसार "पाकिस्तान–आकिस्तान पेट भरने के खेल हैं।"(40) इन लोगों को अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम है। उनका गंगौली की मिट्टी के साथ नाता जुड गया है । वे किसी भी कीमतपर गंगौली छोडने तैयार नहीं हैं । वे हिन्दुस्तान से नाता तोडकर पाकिस्तान जाने का विरोध करते हुए कहते हैं– "ए भाई, बाप–दादा की कबर हियां है, चौक इमामबाडा हियां है , खेत–बाडी हियां है । हम कौनो बुरबक हैं कि तोरे पाकिस्तान जिंदाबाद में फँस

जाए।"(41) गंगौली के तन्नू को भी अपने गाँव पर गर्व हैं वह कहता है – "नफरत और खौफ की बुनियाद पर बननेवाली चीज मुबारक नहीं होती ।"(42)

राजनीतिक आजादी, चुनावप्रणाली और जनतंत्र शासन–प्रणाली के कारण छोटी जाति और निम्न–वर्ग में परिवर्तन की लहर दौडने लगी है । परिवर्तन की लहर से परिचित साधारण लोग अपने साथियों को आगे बढाने की कोशिश कर रहे हैं । छोटी–जाति और निम्न वर्ग के विकास और परिवर्तन की गति बडी–जाति के लोगों को पसन्द नहीं है । वे परिवर्तन के चक्र का विरोध कर अपना आक्रोश प्रकट करने लगे हैं । विकास चक्र की गति को देखकर गंगोली की बडी जाति की मुसलमान स्त्रियाँ कहती हैं – "आसिया ने एक अचम्भे की बात बताई कि सुखरमवा चमार का लडका परसमवा खद्दर की टोपी पहिने ऐसी–ऐसी तकरीर कर रहा था कि मौलवी इब्नेहसन का करिहैं । खुदा गारत करै ई मिट्टी मिले कागरेसियों को जिन्होंने चमारों ओर भगियों का रुतबा बढा दिया है । ऊ सब अछूत ना हैं । हरिजन हो गये हैं । उन्होने मुर्दा खाना भी छोड दिया है और कोई महीना भर पहले चमारों का एक गोल परसरमवा की लीडरी में पंडिताने के कुँए पर चढ गया और पानी भर लाया ।"(43)

फिर से परूसराम चुनाव में विधायक चुना जाता है ओर पुरे गाँव के लोगों को प्रभावित करता है ।

जमींदारी उन्मूलन के कारण किसानों की जमीनें चली जाने से वे दु:खी हो जाते हैं । उनके आर्थिक साधन ही उनसे छीन लिए जाते हैं । परन्तु जब गाँव में सडक का काम शुरु हो जाता है तो लोगों में खुशी छा जाती हैं । एक ग्रामीण मुसलमान कहता है – "....जमींदारी तो जरूर गयी , बाकी गाँव एक दम्मे से बदल गया है । मार सब गलियन में खडंजा लग गया ओर गाजीपुर से हियाँ तक पक्की सडक बन गयी है । अब तो बरसातों में मोहर्रम पडे तो कोई को आये में जहमत न हो सकिहे ।"(44)

परूसराम एम.एल.ए., हम्माद मियाँ से गाँव में सडक बनने और स्कूल के खूल जाने पर कहता है – "इत्ती तकावी यहाँ बाटी गयी है – दो तरफ से पुख्ता सडके बन गई है कि अब

आधे घण्टे में आप लोग शहर पहुँच जाते हैं । गाँव में हर गली पक्की हो गयी है । दो स्कूल चल रहे हैं । .....और कोई सरकार इससे ज्यादा क्या कर सकती है ?"(45)

स्वतंत्रता से पूर्व ग्रामों में जातीय पंचायतें थी । गाँव का मुखिया किसानों से कर वसुल करके सरकार को देता था । स्वतंत्रता के बाद गाँव के पंचायतों का संगठन पूर्ण जनताद्वारा वयस्क मताधिकार के आधारपर होने लगा । प्रत्येक नागरिक को चुनाव में भाग लेने-अपने विचार प्रकट करने का अधिकार प्राप्त हुआ ।

इस प्रकार के अनेक परिवर्तन स्वतंत्रताप्राप्ति के बाद गंगौली के गाँव में आये हैं । परन्तु ब्रिटीश काल में गाँव में हर प्रकार का समाधान लोगों को नहीं मिलता था अपनी ही जनता अपने लोगों को ठगने का प्रयास करने लगी थी । वारफंड जैसे कार्यो के लिए पैसा इकठ्ठा कर उनमें से भी पैसे ठग लिये जाते थे । बार-बार हुऐ अत्याचारों से क्रोधित जनता सिपाहियों और थानेदार को एक बार जलाती है । गाँव के लोगों पर अँग्रेज बडा जुल्म करते थे । लोगों से लगान लिया जाता, वारफंड लिया जाता, लडाई में काम आनेवाले लोगों से भी रिश्वत ली जाती थी । उपर्युक्त परिस्थिति से पता चलता है कि यह काल आनंददायी नहीं था । धनसम्पन्न लोगों की सुरक्षा शासन करता था।जब जनता अपनी शक्ति को समझ सकी तभी वह भ्रष्टाचारी सेवकों का विरोध करेंगी । इस प्रकार का आशावाद लेखक ने व्यक्त किया है ।

राहीजी ने "आधा गाँव" में अपने देश अपनी जन्मभूमि के लोगों के मनोभावों-विचारों का वर्णन बडी आत्मीयता से किया है । "आधा गाँव" की "भूमिका" में लेखक राहीजी कहते भी हैं मेरे दादा जिला आजमगढ के थे लेकिन मैं तो गंगौली का हूँ ।" गाजीपूर मेरे लिए बस एक शहर या गंगौली मेरे लिए बस एक गाँव नहीं है वह मेरा शहर और मेरा गाँव है ।"(46) इस भूमिका सें वह बार-बार स्पष्ट करता है कि मैं गाजीपुर का हूँ, गंगौली से मेरा अटूट सम्बन्ध है । यह एक गाँव नहीं वह तो मेरा घर है । चाहे मेरे दादा कही के रहे हो मैं खुद को गंगौली का ही निवासी मानूँगा । राहीजी गाजीपुर के हर स्थान को खूद में पाते हैं कहते हैं - "मैं केवल गाजीपुर का हूँ । मैं नील के उस गोदाम का हूँ जिसे गिलक्रिस्ट ने बनवाया था । मैं उस गढ़ई का हूँ जिसने गंगा की तरह गंगौली को अपनी गोद में ले रखा है । मैं पाँचवी और आठवीं मोहर्रम के गश्त का

का हूँ । मैं करघों की उन आवाजों का हूँ जो दिन–रात चलते रहते हैं, कभी नहीं रूकते । मैं गया अहीर, हरिया बढई और कोमिला चमार का हूँ । मेरे दादा आये रहे होंगे आजमगढ़ से, क्योंकि सभी के दादा और परदादा कहीं न कही से आये ही रहे होंगे ।"(47)

राही जी गाजीपूर और गंगौली गाँव के हर स्थान से इसतरह परिचित हो गये हैं कि उन्हें वहाँ के इमामबाडे के दरवाजों का रंग तक याद है । उन्हें पाकिस्तान चले जानेवाले लोगों की चिंता नहीं है तो उन्होंने पीछे छोडे गये बिवियों, बच्चो की ज्यादा फिक्र राहीजी को है। इसतरह राहीजी को अपनी जन्मभूमि और वहाँ के लोगों से बेहद प्यार दिखाई देता है ।

11. ग्रामीण वातावरण और पिछडे हुए लोगों का जीवन

भारत कृषि प्रधान देश है । कृषिप्रधान भारत–देहातों में बसा हुआ है । भारत के देहात आत्मनिर्भर थे । अँग्रेजों के आगमन और उनकी शासन–व्यवस्था ने भारतीय देहात की कमर तोड दी । राजनीतिक दासता के साथ आर्थिक गुलामी से देहात की स्थिति बदतर बनती गयी । व्यापार के हेतु आये अँग्रेजोंने धीरे–धीरे सत्ता की बागडोर अपने हाथों में ले ली । उन्होंने अपने शोषण चक्र को तेज कर अमानवीय व्यवहार का नंगा प्रदर्शन किया । उनकी दृष्टि में भारत कच्चा माल निर्माण करनेवाला और अँग्रेजों के कारखानों में निर्मित माल खरीदनेवाले अनपढ़, गँवार लोगों का देश था ।

अँग्रेजों के आने से पहले आर्थिक व्यवस्था का मुख्य आधार गाँव था । जाति व्यवस्था श्रम–विभाजन पर होती थी । वस्तुओं का उत्पादन शहरों में रहनेवाले अमीर लोगों के लिए ही था । इसीलिए व्यापारी वर्ग को धनि लोगोंपर ही निर्भर रहना पडता था । अँग्रेज काल में अँग्रेजों ने अपनी आर्थिक प्रगति के लिए अनेक नये कानून बनाये ओर शासन सूत्र अपने हाथों में ले लिया । अँग्रेजों की नीति भारतीय उद्योगधन्दों को नष्ट करने की थी । साथ ही साथ जमींदार किसानों का आर्थिक शोषण करने लगे जिससे किसानों की आर्थिक स्थिति इतनी दयनीय हो गई कि उन्हें अपनी जमीन बेचकर मजदूर बनना पडा । देहात कारीगर–किसान, मजदूर शहर की ओर भागने लगे परिणामस्वरूप देहात बूढे–बच्चों और नारियों का निवासस्थान मात्र रह गया है ।

भारत में शहरों में आधुनिक उद्योगों का जन्म हुआ । लोगों की रूचि व्यापार की ओर अधिक होने लगी । दूसरे महायुध्द के समय लडाई का सामान तैयार करने में सभी कारखानें व्यस्त हो गयें । इससे पूँजीपतियों ने इतना लाभ कमाया कि राष्ट्रीय आय तथा आर्थिक शक्ति उनके हाथ में केन्द्रीत हो गयी इससे सामान्य जनता और मध्यम वर्ग की स्थिति शोचनीय बन गयी । सरकार ने अधिक संख्या में रूपए छापकर उसकी क्रय शक्ति कम कर दी । इससे किसान–मजदूरों में तथा मध्य वर्ग में भी शिक्षित बेकारी आर्थिक व्यवस्था की मुख्य समस्या बन गयी

इ.स.1947ई.में स्वतंत्रता प्राप्ति मिल गई । जिससे भारत में अनेक आर्थिक प्रश्न खडे हो गये । शरणार्थियों का पुनर्वास एवं काश्मिर प्रश्न मुख्य बन गये । सिपाहियों पर आर्थिक खर्च अधिक होने लगा । स्वतंत्रताप्राप्ति के समय भारत औद्योगिक दृष्टि से एक पिछडा हुआ देश था । पूँजी की कमी, कुशल मजदूरों का अभाव, एकांगी उत्पादन तथा पिछडी हुई कृषि व्यवस्था आदि प्रगति में बाधा के कारण थें । इ.स.1947ई.में स्वतंत्रताप्राप्ति के बाद आर्थिक उन्नति के लिए सरकार ने पंचवर्षीय योजनाएँ बनाई । जिसका उद्देश्य उत्पादन में वृध्दि करना था । पहली–दूसरी योजना काफी सफल रहीं । तीसरी योजना के समय अकाल पडा, चीन, पाकिस्तान के साथ दो युध्द हुए जिससे ये योजनाएँ असफल रहीं । चौथी योजना में अनेक गलत पध्दतियोंसे काम चलाया जिससे आर्थिक हानि हो गई । इस काल में नौकरशाही के भ्रष्टाचार के कारण सामान्य जनता तक अपेक्षित लाभ नहीं पहुँच सका । पूँजीपति वर्ग, नौकरशाही और नेता लोगों ने इसका लाभ उठाया ।

डॉ.राही मासूम रजाजी ने अपने उपन्यास "आधा गाँव" में उपर्युक्त सभी परिस्थितियों का चित्रण किया है । इसके अनेक उदाहरण हमें प्रस्तुत उपन्यास में मिलते हैं ।

. जमींदारी उन्मूलन के कारण उत्पन्न स्थिति

राहीजी ने "आधा गाँव" में जमींदारी उन्मूलन के पश्चात् उदभूत परिणामों को चित्रित किया है । जमींदारी उन्मूलन के कारण जमींदारों के आर्थिक साधन ही नष्ट हो गये । इससे जमींदारों

का एक ऐसा वर्ग बन गया जिसके पास न जमीन है और न कोई पैसे कमाने का साधन । इसीकारण शान से रहनेवाले जमींदारों को बिगडी आर्थिक स्थिति के कारण दो वक्त की रोटी नसीब नहीं हुई । ये लोग परंपरावादी, धार्मिक, अनपढ, अज्ञानी होने के कारण कोई नोकरी या व्यवसाय भी नहीं करते । ऐसा करना वे अपनी शान के खिलाफ मानते हैं । इस उपन्यास में उनकी जर्जर आर्थिक स्थिति का वर्णन हमें मिलता है । जमींदारों को जमींदारी उन्मूलन कानून पर विश्वास ही नही हैं वे सोचते हैं कि जमींदारी खत्म कैसे हो सकती है ?
परुसराम की बाँते सुनकर किसान खुश होते हैं । उन्हें लगता है कि वे – अपनी जमीन के मालिक बन जायेंगे । एक रात बारह बजे उन्हें मालूम हो गया कि जनींदारियाँ खत्म हो गयी । जब परूसराम एम.एल.ए. होकर मियाँ लोगों को सलाम करने गया तभी जमींदारों को मालूम हो गया कि जमींदारियाँ खत्म हो गयी है ।

जमींदारी खत्म होने के कारण पैसा कमाने का कोई अन्य साधन उनके पास नहीं रहा इसीकारण पहले जिन त्यौंहारोंपर बहुत सा रूपया खर्च करनेवाले लोग अब कम पैसा खर्च करने लगे है। मकानों को ठिक करने के लिए पैसा न होने के कारण पुराने मकान गिरने लगे और हम्मादमियाँ जैसे जमींदार आर्थिक कठिनाइयों के कारण खुद हल चलवाकर खेत जोतने लगे हैं । फुस्सू मियाँ ने जूते की दूकान खोलकर अपनी स्थिति को सँभालना चाहा । पहले जो इमामबाडा लोगों से खचाखच भरा रहता वह एक खँडहर बन गया है। वहाँ सिर्फ खामोशी रह गई है ।

ख. **कर्ज की समस्या**

कर्ज देहाती–जीवन की बिडम्बना का प्रमुख कारण माना जाता है । किसान जमींदार साहूकार से कर्जा लेता है । कर्ज चुकाने में उसकी सारी जिंदगी बित जाती है परंतु कर्ज ज्यों-का त्यों बना रहता है । पूरे साल की उपज जमींदार-साहूकार सूद के रूप हड़प करता है परिणामतः कर्ज के कुचक्र में फँसे किसान को जमीन–जायदाद बेचकर जीविका चलने के लिए शहर की ओर भागना पडता है । किसानों की नगरोन्मुखता से देहाती जीवन में पारिवारिक बिखराव, टूटन, अकेलेपन की भावना निर्माण हो गई जिसका आखों देखा हाल डॉ.राहीजी ने हमारे सामने प्रस्तुत किया हैं ।

डॉ.राहीजी के मतानुसार कर्ज की समस्या का कारण जमींदार की शोषण प्रवृत्ति, किसान

का अज्ञान, दिखावे की मनोवृत्ति, आडम्बर और शान को बनाये रखने की प्रवृत्ति बढ़ती हुई महंगाई, औद्योगीकरण आदि हैं ।

ग. बेरोजगारी के कारण उत्पन्न स्थिति

मँहगाई, बढती हुई आबादी, उत्पादन के साधनों की कमी आदि के कारण गाँव के लोग शहर की ओर भागने लगे हैं ।गंगौली का युवावर्ग धन कमाने के लिए कलकत्ता, दिल्ली की ओर भाग रहा है । खेती पर निर्भर गंगौली के किसान की जमीन उससे छीन ली गई परिणाम-स्वरूप विवशता - वश उसे शहर की ओर भागना पड़ा । अपने घर परिवार से दूर रहनेवाले लोगों के कारण उत्पन्न स्थिति का वर्णन लेखक ने इस प्रकार किया है - "कलकत्ता की चटकलों में इसशहर के सपने सन के ताने-बाने में बुनकर दिसावर भेज दिए जाते हैं और फिर सिर्फ खाली आँखे रह जाती है और विरान दिल रह जाते हैं....... कलकत्ता किसी शहर का नाम नहीं है । गाजीपूर के बेटे-बेटियों के लिए यह भी विरह का एक नाम है ...... जिसमें न मालूम कितनी आँखों का काजल बहकर सूख चुका है ।"(48)

गंगौली के लोग मातृभूमि के प्रति प्रेम होते हुए भी विवशतावश कलकत्ता जाने पर मजबूर होते हैं ।

घ. महायुध्द के कारण उत्पन्न स्थिति

विश्वमहायुध्द से अनेक समस्याएँ निर्माण हो गई है। जिसमें प्रमुख है मँहगाई, आवश्यक वस्तुओं की कमी, मानसिक टूटन, सिपाहियों की भर्ती सें उत्पन्न तनाव-डर, आदि । महंगाई बढ गई और दूसरी ओर से सरकार ने वारफण्ड के लिए चन्दा लेने, लगान वृध्दि और गल्ला वसूली आदि योजनाएँ बनाई । इन योजनाओं से गंगौली के लोगों में भी खलबली मची । हकीमसाहब दरोगाजी से कहते हैं - "नौजवान जो जबरदस्ती लाम पर भेजे जा रहे हैं, तो खेती कौन करेगा और जिन काश्तकारों ने पुरानी शरह पर लगान हासिल करना नामुमकिन हे । और जवान हाथों को तरसते हुए खेतों की नीममुर्दा फसलों से अगर सरकार ने गल्ला भी वसूल करना शुरु कर दिया तो देहाती जिन्दगी में खलफिशर हो जाने का अन्देशा है ।"(49)

घ. चेतनासम्पन्न छोटी जाति और निम्न वर्ग

राजनीतिक आजादी, जनतंत्र शासन प्रणाली, प्रौढ मताधिकार, जमींदारी उन्मूलन कानून, बेगार प्रथा का अंत, तथा छोटी जाति के उत्थान के हेतु किए जा रहे कानूनी प्रयास एवं समाज सुधारकों के प्रयत्नों से छोटी जाति और निम्न वर्ग में चेतना–परिवर्तन की भावना निर्माण हो गई है ।

गंगौली का परूसराम चमार एम.एल.ए. बनकर इज्जत के साथ रहने लगा है । चीफ मिनिस्टर भी उसकी इज्जत करते हैं । परूसराम का बाप बडी जाति के विरुद्ध मुकादमा चलाता है । इसप्रकार के उदाहरणोंद्वारा उपन्यासकारने चेतना सम्पन्न छोटी जाति का चित्रण किया हे ।

बेरोजगारी, शिक्षा का अभाव, जीविका चलाने का प्रश्न, साम्प्रदायिकता, जातिवाद, अकेलेपन की भावाना, तनाव–टकराहट आदि के कारण गंगौली में अपेक्षित परिवर्तन के चिह्न दिखाई नहीं देते ।

12. विस्मय और कौतूहल की भावना

आँचलिक उपन्यासकार अछूते अस्पर्शित विषयों एवं ग्रामीण तथा जन–जातीय जीवन को अपने उपन्यास का विषय बनाते हैं, जिसे पढ़ते समय पाठक के मन में विस्मय और कौतूहल की भावना निर्माण होती है ।

डॉ.राहीजी का "आधा गाँव" उपन्यास उपर्युक्त विशेषताओं से युक्त है । शीआ मुस्लिम समाज की समस्त विशेषताओं को चित्रित करनेवाले आलोच्य उपन्यास का शीर्षक ही पाठक के मन में जिज्ञासा निर्माण करता हैं । इस प्रकार का चित्रण शायद पहली बार हिंदी उपन्यास साहित्य में हुआ है ।

गंगौली का विविधता से भरा हुआ समूह जीवन देखकर पाठक के मन में विस्मय कौतूहल की भावना निर्माण होती है । वह नये विषय–आशय, शैली से परिचित होकर भाव विभोर हो उठता है ।

गंगौली का मोहर्रम, उसकी तैयारी, सभी का उसमें सम्मिलित होना, उसके प्रति लोगों का आकर्षण एवं अंधविश्वास सभी विस्मय और कौतूहल के विषय है ।

13. जातिवाद

जन्माधिष्ठित जाति–व्यवस्था भारतीय समाज की अपनी विशेषता है । इसका गन्दा पहलू जातिवाद या संकीर्ण मनोवृत्ति है । ग्रामीण समाज–जीवन पर जातिवाद का गहरा प्रभाव होने के कारण ग्रामीण जन–जीवन से जुडे आँचलिक उपन्यासों में इसके परम्परागत और परिवर्तित रूप का उद्‌घाटन आँचलिक उपन्यासकारोंने किया है ।

रूढी–परम्पराओं को अत्याधिक महत्व देनेवाले, अपने आपको हुसैन के वंशज और सैयद माननेवाले गंगौली के शीआ जमींदार सुन्नी तथा अन्य जातियों को हेय दृष्टि से देखते हैं । सुन्नी के साथ रोटी–बेटी के व्यवहार का विरोध करनेवाले शीआ जमींदार परम्परागत दुश्मनी बनाये रखने के लिए मोहर्रम के समय अन्य तीन खलिफाओं पर अपमानजनक गीत गाते हैं ।

रखैल संस्कृति के समर्थक जमींदार रक्त शुध्दता के घमण्ड को बनाये रखने की कोशिश करते हैं । रखैल के साथ शरीर सम्बन्ध रखनेवाले उसके साथ वैवाहिक –जीवन की स्थापना नहीं करते । इतनाही नहीं वे अपने बच्चों को राकी, जुलाहों बच्चों के साथ खेलने नहीं देते । शीआ मुसलमान अन्य जातियों के साथ मेल–जोल रखना शान के खिलाफ मानते हैं ।

परम्पराप्रियता के कारण शीआ जातिवाद की दीवारों को दृढ करने की कोशिश करते हैं ।

बडी जाति के श्रेष्ठत्व के मानदण्ड निश्चित है । उसमें परिवर्तन–सुधार करने का विरोध किया जाता है । डॉक्टर के साथ कुर्सी पर बैठकर बाते करनेवाले चमार को देखकर क्रोधित हकीम अली कहते हैं – "जब ई जमाना आ गया है कि कमीने कुर्सीपर बइठे लगे । अरे लखना ! ...कुरसिया सब भीतर पहुँचा दे रे । कह दे कि जला के खाना पका डाले लोग । इहै होइहे । कमीने तब बइठिहें कुर्सीपर, अउर अशरफ छिपैहे " मुँह घर में ।"(50)

इसप्रकार चमार, राकियों को शीआ गौण स्थान देते हैं अगर वे पढ-लिखकर आगे बढने की कोशिश करते हैं तो उन्हें आगे बढने नहीं दिया जाता । पढ-लिखकर एम.एल.ए. बना अछूत जाति का परूसराम गाँव की आर्थिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक प्रगति करना चाहता है । गाँव के लोग भी उसका सम्मान करते हैं । गाँव में "उसका सबसे बडा दरबार होता है । उसके दरबार में सभी लखपति भी और फाके मस्त साहिबान भी आते हैं । ये लोग कुर्सियों पर बैठते, सिगरेट पीते और रेडिओ सुनते हैं ।"(51) इससे हमें परूसराम और छोटी जातियो में हुए परिवर्तन का चित्रण मिलता है ।

परूसराम के पिता की पीढी और परूसराम की नई पीढ़ी में काफी अंतर है । जैसे - "सुखरमवा. (परूसराम का पिता) को कुर्सी पर बैठना न आया । वह कुर्सी पर भी उकडू ही बैठा करता था और जब मियाँ लोगों में से कोई आ जाता तो वह घबडाकर खडा हो जाता और उसकी समझ में न आता कि वह उन लोगों का सैतकर कहाँ रखें । वह जिस कदर खुशामद करता मियाँ लोगों का पूरा वजूद लरज उठता ।"(52)

जिस सुखरमवा को कुर्सीपर बैठना भी नहीं आता वह आज जमीदारोंपर मुकदमा चलाने के लिए नोटीस देता है । आधुनिक युग में शैक्षणिक, आर्थिक और धार्मिक क्षेत्र में इन लोगों को समता देने की कोशिश की जा रही है । आज यह उपेक्षित समाज अन्य जातियों की तरह मंदिरों में प्रवेश कर सकता है । ब्राम्हण बच्चों के साथ बैठकर शिक्षा प्राप्त कर सकता है । अनेक सुविधाएँ प्राप्त होने से उसकी आर्थिक स्थितिमें सुधार हुआ है । आर्थिक स्वावलम्बन के कारण छोटी जाति और निम्न -वर्ग में सम्मान, प्रतिष्ठा के प्रति सजगता की भावना निर्माण हो गई है । उपन्यासकार ने अनेक प्रसंगो और उदाहरणोंद्वारा इसे स्पष्ट किया हैं ।

14. स्थानीय रंग

स्थानीय रंग आँचलिक उपन्यास की प्रमुख विशेषता मानी जाती है । इसे बाहृय विशेषता के रूप में स्वीकृति दी जाती है । स्थानीय रंग के अंतर्गत अंचलवासियों का खान-पान, रीति-रिवाज, तीज-त्यौहार, प्रथा-परम्परा, प्राकृतिक विशेषता, बोली-भाषा, पहनावा आदि का समावेश किया जाता है ।

"आधा गाँव" में स्थानीय रंग उपलब्ध होता है । जिसे निम्नलिखित पंक्तियों में स्पष्ट करने का हमारा प्रयास है ।

उत्सव–त्यौहार

गंगौली मे शीआ मुसलमानों का सबसे महत्वपूर्ण त्यौहार मोहर्रम है । वे मोहर्रम की तैयारी एक महीना पहलेसे शुरू करते हैं । इसके लिए काले कपडे सिलवाते हैं । मोहर्रम की मजलिसों में बेहोश होने की तैयारी करते हैं । नौहा पढने के लिए लोक धुनों को सीखते हैं । नौहों का असर होने के लिए गंभीर धूनों को बजाते हैं ।

गंगौली के उत्तरपट्टी और दक्खिनपट्टी मे मोहर्रम के दिनों में ताजियाँ निकालने नौहा पढने एवं बेहोश होने की होड लगी रहती है । मोहर्रम के जुलूस में मुस्लिमों के साथ गाँव के अन्य जाति–धर्म के लोग सम्मिलित होते हैं । जाति–धर्म की दीवारें उन्हें नहीं रोकती । हिंदू भी इसमें सम्मिलित होते हैं ।

मोहर्रम के साथ अनेक प्रकार की कथा जुडी हुई है जैसे –मोहर्रम के दस दिनों में हँसना नहीं चाहिए । हँसनेवाले को अल्ला सजा देता है । मोहर्रम के दिनों में इमामबाडा जिन्नों के चंगुल से मुक्त होता है । ताजियों के नीचे से गुजरने से हर प्रकार की मुसीबतें समाप्त होती है । वास्तव में इसप्रकार की धारणा अंधविश्वास का रूप है ।

मोहर्रम पर आँसू बहाना, ईद पर खुशी मनाना शीआ लोगों की परम्परा है फिर गंगौली का मोहर्रम अन्य सभी प्रदेशों से अलग है । पूरे साल भर मोहर्रम की प्रतीक्षा करनेवाले बकरीद के बाद तैयारी में जुट जाते हैं । नौकरी–व्यवसाय के हेतु गाँव से दूर रहनेवाले गंगौली के लोग मोहर्रम मनाने के लिए गाँव आते हैं । पाकिस्तान बनने पर भी गंगौली के मोहर्रम में सम्मिलित होने के लिए गंगौली लोग आते हैं ।

मँहगाई, शिक्षा प्रसार, अर्थाभाव आदि के कारण उत्सव–त्यौहार परम्परागत रूप में मनाना संभव नहीं होता जिसका चित्रण डॉ. राहीजी ने किया है ।

वेशभूषा

गंगौली के मुस्लिम जमींदार परंपरा से चला आया पहनावा पहनते हैं । पुरूषोंका पहनावा है सीली हुई लुंगी या पाजामा, कुरता और सरपर टोपी । यहाँ की शीआ सैदानियाँ कुरता–पाजामा पहनती हैं उस पर दुपट्टा ओढती है और लडकियाँ चुडीदार पाजामा पहनती हैं । यहाँ की मुस्लिम स्त्रियाँ उनकी परंपरानुसार मर्दों के सामने आते वक्त घुँघट निकालती हैं । इनके समाज में मर्दों को मुँह दिखलाना जायज नहीं हैं इसीलिए औरतों के लिए घरों में जनानखाने होते हैं ।

ईद के दिन गंगौली का हर मुस्लिम कुरता, शेखानी और टोपी पहनता है । गोबरधन जैसे लोग अमीर न होते हुए भी रोब जमाने के लिए सिल्क का कुरता पहनते हैं । आगे चलकर इन परंपरागत वेशभूषा में बदलाव आया । जमींदारी उन्मूलन के कारण जमींदारों की आर्थिक स्थिति भी गिड गई जिससे उनकी पोषाखमें बदल आता है । आर्थिक दशा में सुधार होने के कारण राकी जाति के प्रयोग भी सिल्क की शेखानी और सर पर खुबसूरत पल्ले की टोपी पहनने लगे हैं । परूसराम चमार भी चुनाव जितनेपर सफेद कपडे पहनता है । वह हाथ में घडी और कुर्ते के जेब में पेन रखता है । वह चश्मा भी पहनता है । कभी कभी वह खद्दर काकुरता, खद्दर की धोती और पाँव में सैडिल पहनता हैं । परूसराम की बीवी भी साडियों के साथ कीमती जेवर, लिपस्टिक लगाती है ।

खान–पान

जमींदार लोग वैभव सम्पन्न होने के कारण अच्छा खान–पान करते हैं । शादी ब्याह तथा खुशी के मौकोंपर ये लोग मिठाइयाँ बाँटते है । यहाँ के जमींदार मुकदमा जीत जानेपर भी मिठाइयाँ बाँटते हैं जब फुन्ननमियाँ को सजा होती है तब उसका दुश्मन समीउद्दीन खाँ रसीली इमरतियों की टोकरी ठाकूर साहब के लिए भेजते हैं । यहाँ के जमींदार लोग नाश्ते में घी–नमक की टिकियाँ, अंडे के खोगीने खाते और ताम–चीनी के प्यालों में चाय पीते हैं ।

दोपहर के खाने से पहले दस्तरखाँन बिछाकर ही खाना खाया जाता हैं । जो मुस्लिम समाज में आवश्यक माना जाता है । खान–पान में जौनपुरी और अनन्नास का खमीरा, चने का हलुवा, दही–बडे, माश की मीठी फुलकियाँ, चपातियाँ रौगनरोटी, गाय के गोश्त का कलिया, अरहर

की बघारी हुई दाल जिसमें लहसून भी डालते हैं, लाल रंग का चावल, पालक का साग, दही की कतहरी, गुर्दा आदि होता है । यहाँ खाना खाने के बाद गिलौरी खाना और हुक्का पीने का प्रचलन है । अमीर लोग कैंची की सिगरेट पीते हैं । इलायची और घी डाला हुआ गुड और पानी देकर मेहमान का स्वागत करने की प्रथा प्रचलित है ।

प्रथा–परंपरा

तीज–त्यौहार, शादी–ब्याह के समय अनेक प्रथाओं का पालन करने की परम्परा गंगौली में है । दुल्हा नाचते–गाते दुल्हन के घर बारात लेकर आता है । उसका स्वागत सत्कार करने के हेतु दुल्हन की रिश्तेदार महिलाएँ गीत गाती हैं – "बडी धूम गजर से आया री बना......"(53)

इन गीतों में गालियाँ भी होती है जिसमें हास–परिहास का भी पुट रहता है । विवाह के समय लडकियों से दहेज माँगा जाता है । शादी में लडकेवाले लडकी को पैसे के रूप में मेहर बाँधते हैं जिसे शादी के तुरन्त बाद लडकी को दिया जाता है । शादी में वर आने घर जाते समय परम्परानुसार अपनी सास का दूपट्टा पकडता है तब सास उसे रुपए देती है घर जाने के बाद दुल्हन को मुँह दिखलायी के रूप में पैसे या जेवर दिया जाता है । यहाँ शादी–ब्याह के मौकोंपर नाचनेवाली औरतों को बुलाने की भी प्रथा है जिसमें जमींदार उनकी नथ उतारते हैं और इसमें होड लगी रहती है । इसप्रकार की अनेक परंपराएँ शीआओं में विद्यमान है । जो अन्य जातियों से अलग स्थान रखती है ।

स्थानीय बोली

"आधा गाँव" में लेखक ने गंगौली में स्थित भोजपुरी उर्दू को लिया है । जो यहाँ के वातावरण संस्कृति में सहायक बन गयी है । यहाँ के शीआ अन्य भाषाओं का प्रयोग नहीं करते । उन्हें अपनी ही भाषा से अत्याधिक प्रेम है । वे अनजान भाषा को अपनाना नहीं चाहते जिससे उपन्यास में हिन्दी – उर्दू समस्या खडी हुई दिखाई देती है । यह कथा खडीबोली उर्दू में कही गई है फिर भी पुस्तक देवनागरी लिपि में छपी है । यहाँपर अनेक अरबी, फारसी शब्द भी आये हैं

अनेक वर्णनों को साधरण पाठक भी नहीं समझ सकता । इनकी भाषा में अनेक गालियों का भी प्रयोग है जो उनकी बोलचाल की भाषा है । स्थानीय भाषा-सम्बन्धी विवेचन अन्यत्र होने के कारण दुहरावट टालने के हेतु यहाँ केवल संकेत मात्र दिया गया है ।

स्थानीय रंग की दृष्टि से "आधा गाँव" सफल उपन्यास है ।

15. लेखक का समाजशास्त्रीय और सौंदर्यवादी दृष्टिकोण

सौंदर्य एवं सत्य की अनुभूति अर्थात विश्व में होनेवाली विभिन्न सुसंगतियों की अनुभूति है। साहित्य में यह सुसंगति मानवीय व्यवहारों ओर प्रवृत्तिद्वारा अभिव्यक्त होती हे । इसी भावसंगति का अनुभव आँचलिक उपन्यासोंद्वारा प्राप्त होता है । इन उपन्यासोंद्वारा हमारी सौंदर्यभावना अधिक उत्कट, गहरी व्यापक बनती है ।

"आधा गाँव" उपन्यास में राहीजी ने गंगौली मे स्थित शीआ सम्प्रदाय कावर्णन किया है । यहाँ के ज्यादातर मुस्लिम जमींदार होने के कारण वैभव सम्पन्न थे । वे किसानों का आर्थिक शोषण करते थे । पैसों के बल पर वे कोई भी काम आसानी से करवा सकते थे । बेगुनाहों को फाँसी दिलवाना वे अपनी शान समझते थे । वे रात को डाके डलवाते हैं और दिन को मुकदमें लड़वाते हैं । रखैलों को रख छोडना वे आपनी शान समझते हैं । इन जमींदारों के वर्णन से हमें पता चलता है कि शीआ सम्प्रदाय कैसा रहा होगा । लोगों के साथ किये हुए आचरण से उनके विचार प्रकट होते हैं । राहीजी ने शीआ सम्प्रदाय के सगुणों के साथ उनके दुर्गुणों को भी बताया है साथ ही वे स्वयं एक शीआ मुस्लिम होने के कारण इस समाज का बारिकियों से वर्णन किया है । आवश्यकता-नुसार अनेक जातियों का उल्लेखमात्र किया हैं । जमींदारों के सामने परूसराम चमार जैसे अछूत को एम.एल.ए. बनाकर निम्न जाति को ऊपर उठाना चाहा है उनमें नई चेतना लानी चाहि हैं । यहाँपर राहीजी का व्यापक सामाजिक दृष्टिकोण दिखाई देता है । परंपरा से अछूत माने जानेवाले लोगों में से एक पढ-लिखकर एम.एल.ए. बन जाता है साथ ही जमींदारो की तरह वह भ्रष्टाचार या दुष्कर्म नहीं करना चाहता बल्कि अपने गाँव में अनेक बदलाव लाना चाहता है जिससे सभी लोगों को फायदा होता है ।

लेखक राहीजी ने इस उपन्यास में शीआ मुस्लिमों के पर्व, त्यौहार, रीति–रिवाजों का खुलकर वर्णन किया है । उनके जन–जीवन में व्याप्त मोहर्रम का वर्णन बडी आत्मीयता से किया हैं जिससे मोहर्रम के हर पहलू से हम परिचित होते हैं । उनके जीवन में व्याप्त गीत जो रोज गुणगुणाये जाते हैं – जैसे ,

"मैं यह नहीं कहती कि ....

बाबा मुझे फिज्जा की स्वारी में बिठा दो ।"(54)

2. देखो तो समधिन आयी है बडे मजेदार–सी...

.... बडी लौंडेबाज

.... बडी गुँडेबाज ।..(55)

शादी–ब्याह के समय गाये जानेवाले गीतों में गालियों और उपहास का पुट भी होता है जैसे – "कोठे से बडा लम्बा हमारा बना................,..........

बन्ने का अब्बा टेनी मुर्गा हमारा बना....."(56)

इसप्रकार के अनेक उदाहरणों से हमारे सामने शीआ मुस्लिमों के जनजीवन को प्रस्तुत किया है जिससे लेखक का सौंदर्यवादी दृष्टिकोण भी हमारे सामने प्रस्तुत हुआ है । लेखक ने समस्या चित्रण समाज शास्त्रीय दृष्टि से किया है । जिसका विवेचन "आधा गाँव मे चित्रित समस्या" शीर्षक अध्याय में है ।

16. राष्ट्रीय जागरण की भावना और जन–जागरण की नई दिशा

स्वातंत्र्योत्तर युग में ग्रामीण अंचलों में चेतना की लहर दौड़ने लगी है । राजनीतिक जागरण, शिक्षा प्रसार, कानूनी प्रयास आदि के कारण सदियों से उपेक्षित समाज अधिकार पाने के लिए संघर्ष, हडताल करने लगा है । इसमें राष्ट्रीय जागरण की भावना पैदा हो गई है । –स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले तथा बाद में अछूतों के साथ अन्य लोगों का व्यवहार अच्छा नहीं था । स्वतंत्रताप्राप्ति के साथ देश का बँटवारा दो भागों में हो गया । जिन्ना के नेतृत्व में मुस्लिमों के लिए पाकिस्तान की निर्मिती हो गई । गंगौली के कुछ शीआ मुसलमान भी पाकिस्तान चले गए । जिससे गंगौली के अनेक परिवार टूट गए । मुस्लिम लीग की राजनीति तो सफल हो गई । प्रत्येक मुस्लिमों के मन में हिन्दुस्तान के प्रति द्वेषभावना पैदा हो गई ।

गंगौली की मिट्टी के प्रति ईमान रखनेवाले शीआ जमींदारों की जमींदारी–उन्मूलन कानून ने कमर तोड दी । "सदियों से रहने बसने और जीने मरनेवाले मियाँ लोगों ने देखा कि जिस गाँव को वे अपना कहते और समझते आये थे उस गाँव से उनका कोई रिश्ता ही नहीं रह गया था । इन लोगों के लिए पाकिस्तान का बनना या न बनना बेमानी था, लेकिन जमींदारी के खात्मे ने उनकी शख्सियत की बुनियादें हिला दी जब घर ही छूट गया तो गाजीपूर और कराची में क्या फर्क है । कराची में कम से कम इस्लामी हुकूमत तो है ।"(57)

परिवर्तन की हवा गंगौली में पहुँच गयी है । कमालुद्दीन राकी, जुलाहों के बच्चों के लिए स्कूल चलाता है । परूसराम एम.एल.ए. बनकर छोटी जाति में चेतना भरता है । सईदा परम्परागत बंधनों को ठुकराकर शिक्षा प्राप्त कर धन कमाती है । जमीदार जीविका चलाने के लिए नौकरी व्यवसाय कर रहे हैं । प्रेम–विवाह, अन्तर्जातीय विवाह सम्पन्न हो रहे हैं । राजनीतिक आजादी के लाभों से सभी परिचित हो रहे हैं । कुल मिलाकर गंगौली में चेतना की लहर और राष्ट्रीय जागरण की भावना निर्माण हो गई है ।

17. फोटोग्राफिक शैली

यथार्थवादी शैली को ही फोटोग्राफिक शैली कहा जाता है । फोटोग्राफर दृश्य की तस्वीर जिसतरह खींचता है उसीप्रकार लेखक तटस्थवृत्ति से किसी अंचल का यथार्थ चित्रण करता है । यथार्थवादी दृष्टि का लेखक मानवीय प्रवृत्तियों का वर्णन करते समय अच्छाई और बुराइयों को एक ही दृष्टि से देखता है ।

डॉ.राही मासूम रजा जी ने "आधा गाँव" उपन्यास में शीआ मुस्लिमों का वर्णन तटस्थवृत्ति से किया है । वे स्वयं इस समुदाय के होने के नाते शीआओं का सिर्फ गुनगान ही नहीं करते है बल्कि उनमें स्थित बुराइयों का भी चित्रण करते है । इस उपन्यास का कथानक पूर्ण यथार्थ लगता है । वे स्वयं भी इस कथानक में पात्र के रूप में सामने आये हैं । वे बताते हैं कि काल्पनिक पात्रों में असल पात्र भी मिलाये हैं । "यह गंगौली कोई काल्पनिक गाँव नहीं है और इस गाँव में जो घर नजर आयेंगे, वे भी काल्पनिक नही हैं । मैंने तो केवल इतना किया हैं कि इन मकानों को मकानवालों से खाली करवाकर इस उपन्यास के पात्रों को बसा दिया हैं ।"(58)

इस उपन्यास की सबसे बडी विशेषता संयम हीनता है । इसके पात्र बिना लगान के हैं और वहाँ स्थित भोजपुरी-भाषी गालियों को भी सहज अभिव्यक्त किया है जिससे कहींपर भी दिखावा नजर नहीं आता । लेखक कही पर भी पात्रों पर हावी नहीं हुआ है । केवल ठोस पक्की जानकारी लेखक ने पाठक के सामने रखी है ।

18. **लोक-साहित्य**

लोकसाहित्य जनता के भावों की सहज, सरल, स्वाभाविक अभिव्यक्ति है । जिस साहित्य में सामान्य जनता का सुख-दुःख अभिव्यक्त होता है, वह लोकसाहित्य माना जाता है । आँचलिक उपन्यास का उद्देश किसी विशिष्ट अंचल का लोक जीवन प्रस्तुत करना होता है । लोक साहित्य के द्वारा यह काम सुलभ होता है । अतः आँचलिक उपन्यासों में मुहावरे, लोकोक्ति लोककथा, लोकगीतों का समावेश किया जाता है ।

राही जी के "आधा गाँव" उपन्यास में उत्सव -त्यौहारों के साथ जुडी प्रथा एवं लोककथा दिखाई देती है । यहाँ के लोग मोहर्रम बहुत बडा मनाते हैं । इसे वे ज्यादा महत्व देते हैं । इसकी वे एक महीना पहले से तैयारी शुरु कर देते हैं, कपडे सिलवाते हैं, घरों को सजाते हैं, स्त्रियाँ पहले ही चूडियाँ पहन लेती हैं । यहाँ के लोगों में इमाम हुसैन को लेकर एक लोककथा प्रचलित थी कि - इमाम हुसैन ने अमर-बिन-साद से कहा था कि मैं बैअत नहीं कर सकता, लेकिन अगर यजीद यह समझता है कि मैं बगावत कर दूँगा तो वह मुझे हिन्दुस्तान चले जाने दे, इसीलिए हुसैन को माननेवाले हिन्दुस्तान का बुरा नहीं चाह सकते । आखिर मौला और आका ने कुछ सोचकर ही तो काफिरों के इस मुल्क को चुना होगा ।"(59) इसके साथ यह भी कथा प्रचलित थी कि एक कश्मिरी ब्राम्हण भी कर्बला में इमाम हुसैन के साथ शहीद हुआ था और उसके खानदानवाले खुद को "हुसैनी ब्राहमण" कहते हैं । उनकी गर्दन में गुलुबंद की तरह एक लाल लकीर-सी पडी होती है । इसके उदाहरण के लिए वे गाजीपुर के डॉक्टर त्रिलोकीनाथ को दिखाते हैं कि वह हुसैनी ब्राहमण है । उसकी गर्दन में वह खून की डोरी है । जब हुसैन हिन्दुस्तान आये थे तो हम आ गये अब हम पाकिस्तान क्यों चले जाए यही उनकी धारणा थी ।

इस लोककथा के साथ गंगौली के शीआ लोगों का सुख जुडा हुआ है । जिस मुल्क में उनके सेनापति कर्बला से आकर गये हैं उस मुल्क में अपना निवासस्थान देखकर वे खुश होते हैं ।

गंगौली के शीआ मोहर्रम के समय गाये जानेवाले गीतों में तर्बरा, सोजख्वॉनी, मरसिया, नौहा गाते हैं और मिसरा पढ़ते हैं जीससे लोकगीत का पुट दिखाई देता है । जिससे वहाँ का सांस्कृतिक स्वरूप भी हमारे सामने आता है । इसके कुछ उदाहरण यहाँपर दि ए है ।

मरसिया

"जिस घडी नहर प–खैये.......
.... लबे दरया के हुए ......।"(60)

नौहा

"सुगरा मदीना लुट गया...
चिल्लायी जैनब पीट सर...
सुगरा मदीना लुट गया ...."(61)

सोजख्वॉनी

.....सकीनी बीवी के देखने को जो........................
सकीना बीवी के देखने को......."(62)

मिसरा

"ये वह असा है पीर जवान रहता है जिससे......."(63)

इसप्रकार मोहर्रम के अलावा शादी–ब्याह एवं खुशी के समय अनेक गीतों को गाया जाता है । जिससे वहाँ का लोकसाहित्य हमारे सामने आता है जिसका चित्रण करनेमें राहीजी सफल बन गए हैं ।

अ.नं.	लेखक	पुस्तक	पृ.क्र.
1.	सम्पा.सर मौनियर विलियम	संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी	11
2.	सम्पा. रामस्वरुप शास्त्री	आदर्श हिन्दी संस्कृत कोश	41
3.	सम्पा.जयशंकर जोशी	हलायुध कोश	111
4.	डॉ.आदर्श सक्सेना जी	हिन्दी के आँचलिक उपन्यास और उनकी शिल्पविधि	18
5.	Ed.by R.E. ALLEN	The Oxford Dictionary of Current English	627
6.	मूल सम्पा.शामसुंदर दास	हिन्दी शब्दसागर (प्रथम भाग)	12-13
7.	सम्पा.रामचन्द्र वर्मा	मानक हिन्दी कोश (पहला खण्ड)	9
8.	- वही -	प्रामाणिक हिन्दी कोश	4
9.	डॉ.सत्यपाल चुघ	प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासों की शिल्पविधि	556
10.	डॉ.रामदरश मिश्र	हिन्दी उपन्यास एक अन्तर्यात्रा	180
11.	श्री.प्रकाश बाजपेयी	हिन्दी के आँचलिक उपन्यास	10
12.	राधेश्याम कौशिक	- वही -	12
13.	सुभाषिनी शर्मा	स्वातंत्र्योत्तर आंचलिक उपन्यास (प्राक्कथन)	5
14.	"त्यागी" सुमित्रा	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य में जीवन दर्शन	226
15.	मृत्युंजय उपाध्याय	हिन्दी के आंचलिक उपन्यास	17
16.	ह.के.कडवे	हिन्दी उपन्यासों में आँचलिकता की प्रवृत्ति (से उद्धृत)	23
17.	राही मासूम रजा	आधा गाँव	253
18.	- वही -	- वही -	284
19.	- वही "	- वही -	262
20.	- वही -	- वही -	262
21.	-वही -	- वही -	108

अ.नं.	लेखक	पुस्तक	पृ.क्र.
22.	राही मासूम रजा	आधा गाँव	38
23.	– वही –	– वही –	18–19
24.	– वही –	– वही –	13
25.	– वही –	– वही –	73
26.	– वही –	– वही –	74
27.	– वही –	– वही –	169
28.	– वही –	– वही –	10
29.	– वही –	– वही –	363
30.	– वही –	– वही –	26
31.	– वही –	– वही –	246
32.	– वही –	– वही –	115
33.	– वही –	– वही –	52
34.	– वही –	– वही –	222
35.	– वही –	– वही –	222
36.	– वही –	– वही –	316
37.	– वही –	– वही –	316
38.	– वही –	– वही –	316
39.	– वही	– वही –	278
40.	– वही –	– वही –	269
41.	– वही –	– वही –	162
42.	– वही –	– वही –	263
43.	– वही –	– वही –	122
44.	– वही –	– वही –	362
45.	– वही –	– वही –	356
46.	– वही –	– वही –	303

अ.क्र.	लेखक	पुस्तक	पृ.क्र.
47	राही मासूम रजा	आधा गाँव	304
48.	– वही –	– वही –	10
49.	– वही –	– वही –	149–50
50.	– वही –	– वही –	280
51.	– वही –	– वही –	353
52.	– वही –	– वही –	353–54
53.	– वही –	– वही –	169
54.	– वही –	– वही –	174
55.	– वही –	– वही –	285
56.	– वही –	– वही –	170
57.	– वही –	– वही –	309
58.	– वही –	– वही –	15
59.	– वही –	– वही –	61
60.	– वही –	– वही –	68
61.	– वही –	– वही –	297
62.	– वही –	– वही –	341
63.	– वही –	– वही –	341